SAKET AGARWAL

CHANDANI AGARWAL

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 119531901

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
02/10/1991	जन्म तिथि	26/01/1996
बुधवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 08:40:00	जन्म समय	11:50:00 घंटे
घटी 07:25:15	जन्म समय(घटी)	13:05:24 घटी
India	देश	India
Patna	स्थान	Patna
25:35:38 उत्तर	अक्षांश	25:35:38 उत्तर
85:08:15 पूर्व	रेखांश	85:08:15 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:10:33	स्थानिक संस्कार	00:10:33 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:41:53	सूर्योदय	06:35:50
17:35:46	सूर्यास्त	17:28:05
23:44:47	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:15

तुला	लग्न	मेष
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
मिथुन	राशि	मीन
बुध	राशि-स्वामी	गुरु
पुनर्वसु	नक्षत्र	रेवती
गुरु	नक्षत्र स्वामी	बुध
3	चरण	4
शिव	योग	सिद्ध
गर	करण	गर
हा-हरीश	जन्म नामाक्षर	ची-चित्रलता
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
शूद्र	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
मार्जार	योनि	गज
देव	गण	देव
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मेष	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 4वर्ष 10मा 7दि		23:19:06	तुला	लग्न	मेष	21:48:07	बुध 2वर्ष 11मा 12दि	
बुध		14:41:18	कन्या	सूर्य	मक	11:46:11	शुक्र	
10/08/2015		29:17:15	मिथु	चंद्र	मीन	27:41:06	08/01/2006	
09/08/2032		26:25:29	कन्या	मंगल	मक	20:12:16	08/01/2026	
बुध	06/01/2018	13:27:25	कन्या	बुध व	धनु	26:31:25	शुक्र	09/05/2009
केतु	03/01/2019	10:20:46	सिंह	गुरु	धनु	11:15:09	सूर्य	10/05/2010
शुक्र	03/11/2021	03:14:21	सिंह	शुक्र	कुंभ	19:38:12	चन्द्र	08/01/2012
सूर्य	09/09/2022	06:27:16	मक व	शनि	कुंभ	27:42:39	मंगल	10/03/2013
चन्द्र	08/02/2024	21:23:59	धनु व	राहु	कन्या	26:31:31	राहु	09/03/2016
मंगल	05/02/2025	21:23:59	मिथु व	केतु	मीन	26:31:31	गुरु	08/11/2018
राहु	25/08/2027	16:09:30	धनु	हर्ष	मक	07:01:00	शनि	08/01/2022
गुरु	30/11/2029	20:15:05	धनु	नेप	मक	01:49:37	बुध	08/11/2024
शनि	09/08/2032	24:57:36	तुला	प्लूटो	वृश्चि	08:51:25	केतु	08/01/2026

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:44:47 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:15

लग्न-चलित

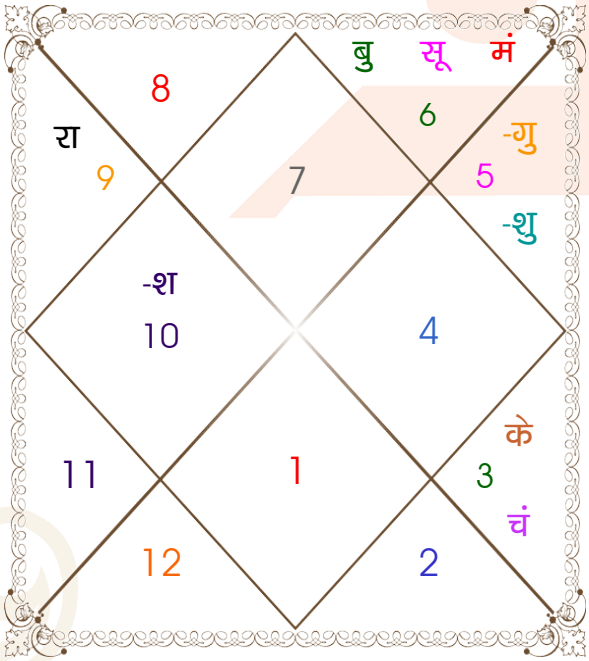

लग्न-चलित

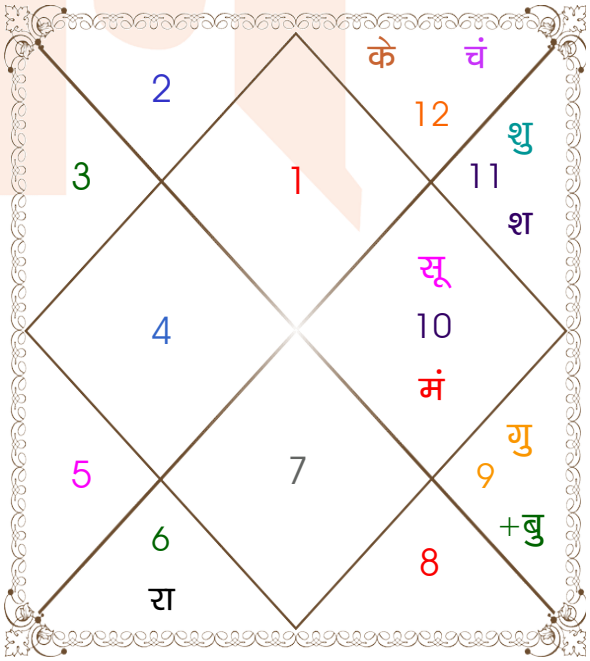

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
तुला	23:19:06	तुला	08:54:19	1	मेष	04:38:59	मेष	21:48:07
वृश्चि	24:29:32	वृश्चि	08:54:19	2	वृष	04:38:59	वृष	17:29:51
धनु	25:39:57	धनु	10:04:45	3	मिथु	00:20:43	मिथु	13:11:35
मक	26:50:23	मक	11:15:10	4	मिथु	26:02:27	कर्क	08:53:19
कुंभ	25:39:57	कुंभ	11:15:10	5	कर्क	26:02:27	सिंह	13:11:35
मीन	24:29:32	मीन	10:04:45	6	कन्या	00:20:43	कन्या	17:29:51
मेष	23:19:06	मेष	08:54:19	7	तुला	04:38:59	तुला	21:48:07
वृष	24:29:32	वृष	08:54:19	8	वृश्चि	04:38:59	वृश्चि	17:29:51
मिथु	25:39:57	मिथु	10:04:45	9	धनु	00:20:43	धनु	13:11:35
कर्क	26:50:23	कर्क	11:15:10	10	धनु	26:02:27	मक	08:53:19
सिंह	25:39:57	सिंह	11:15:10	11	मक	26:02:27	कुंभ	13:11:35
कन्या	24:29:32	कन्या	10:04:45	12	मीन	00:20:43	मीन	17:29:51

तारा चक्र

पू०भाद्रपद	विशाखा	पुनर्वसु	**जन्म**	रेवती	आश्लेषा	ज्येष्ठा
उ०भाद्रपद	अनुराधा	पुष्य	**सम्पत**	अश्विनी	मघा	मूल
रेवती	ज्येष्ठा	आश्लेषा	**विपत**	भरणी	पू०फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा
अश्विनी	मूल	मघा	**क्षेम**	कृतिका	उ०फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा
भरणी	पूर्वाषाढ़ा	पू०फाल्गुनी	**प्रत्यारि**	रोहिणी	हस्त	श्रवण
कृतिका	उत्तराषाढ़ा	उ०फाल्गुनी	**साधक**	मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा
रोहिणी	श्रवण	हस्त	**वध**	आर्द्रा	स्वाति	शतभिषा
मृगशिरा	धनिष्ठा	चित्रा	**मित्र**	पुनर्वसु	विशाखा	पू०भाद्रपद
आर्द्रा	शतभिषा	स्वाति	**अतिमित्र**	पुष्य	अनुराधा	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

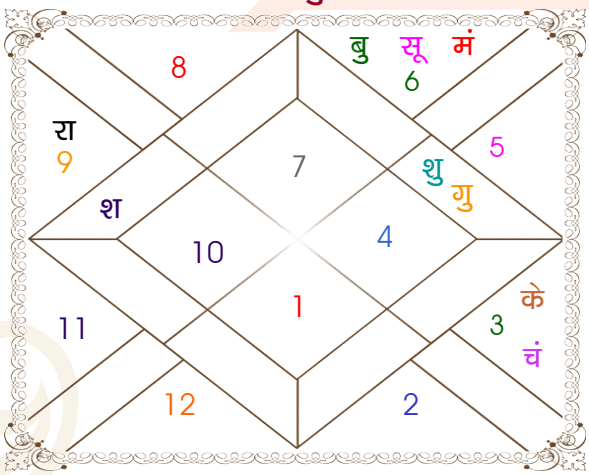

चलित कुंडली

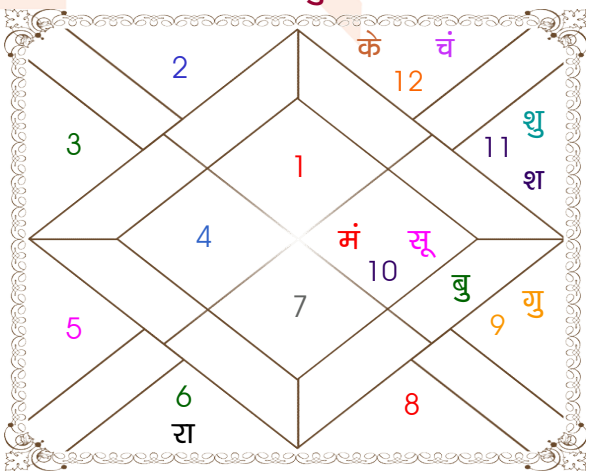

चन्द्र कुंडली

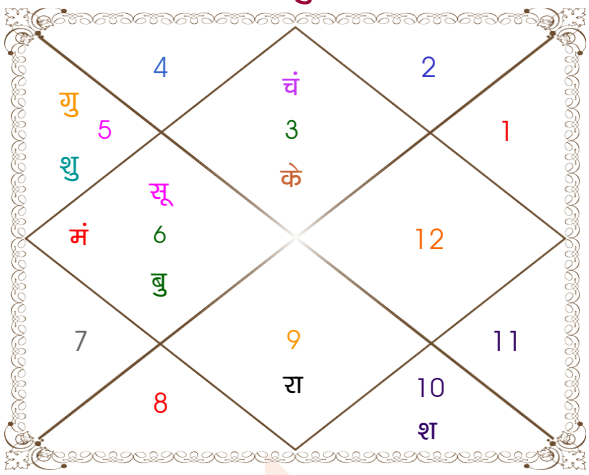

चन्द्र कुंडली

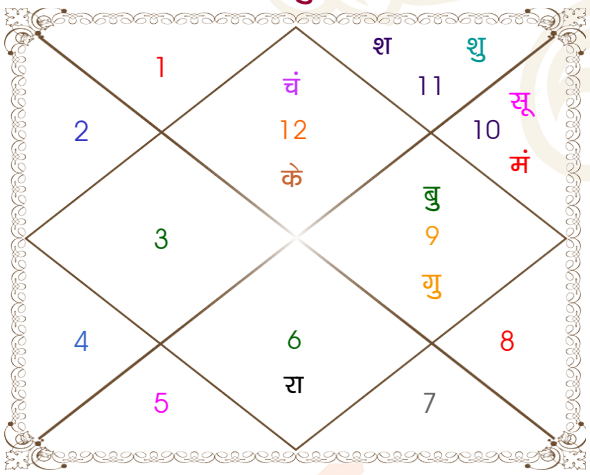

सूर्य कुंडली

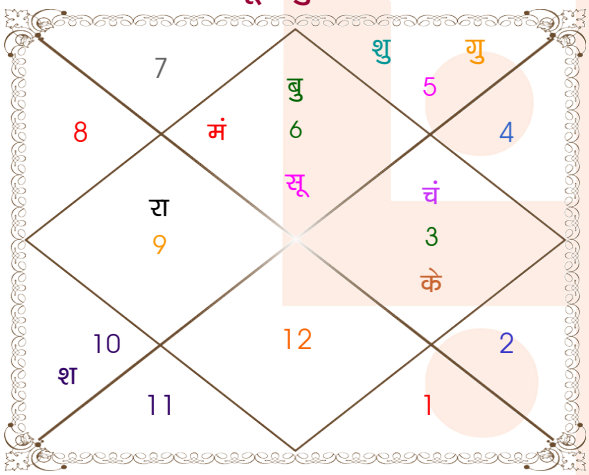

सूर्य कुंडली

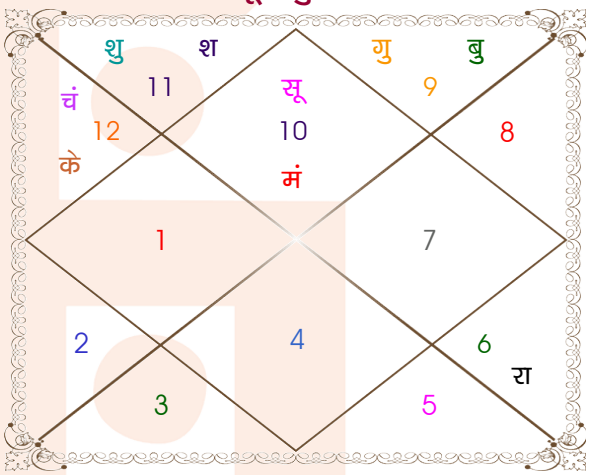

नवमांश कुंडली

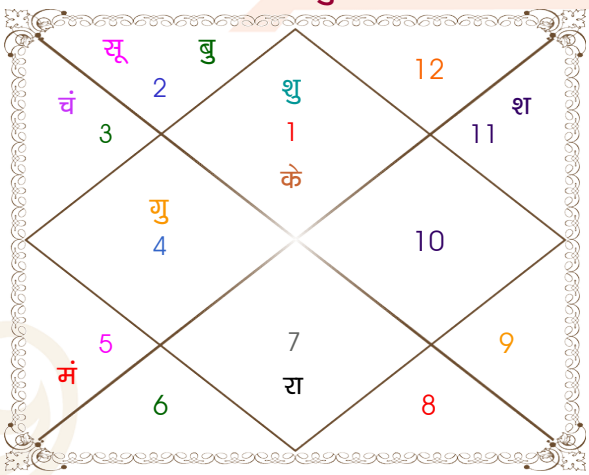

नवमांश कुंडली

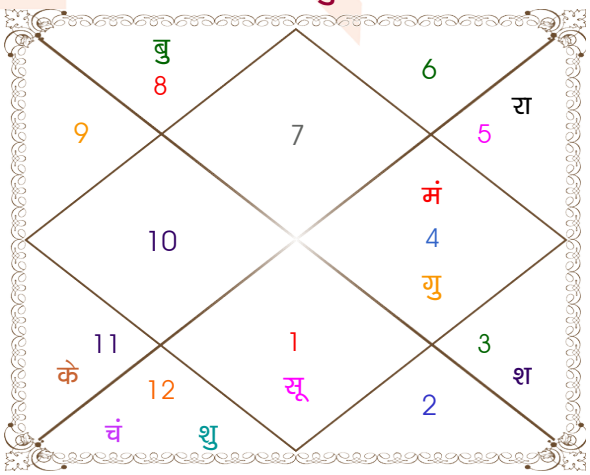

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

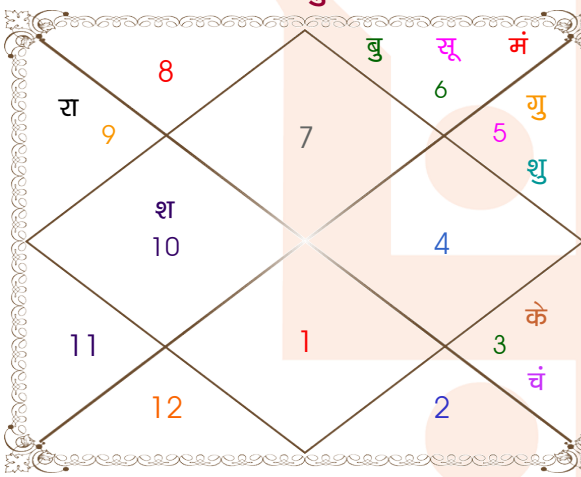

देह विचारः

लग्न कुंडली

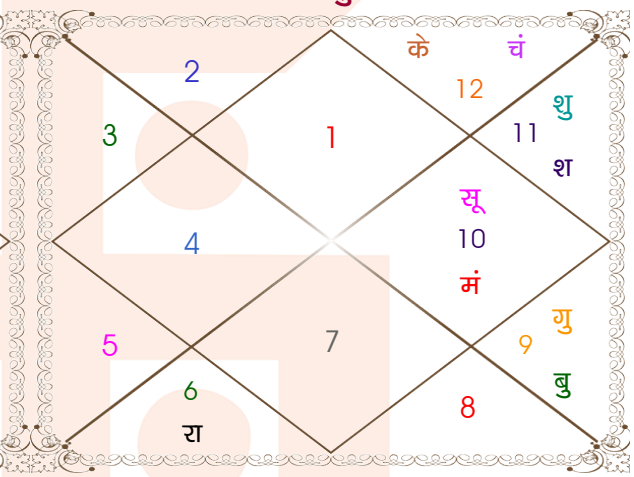

देह विचारः

होरा कुंडली

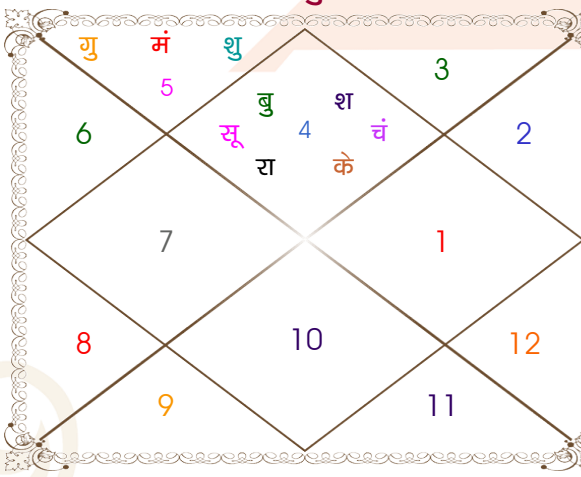

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

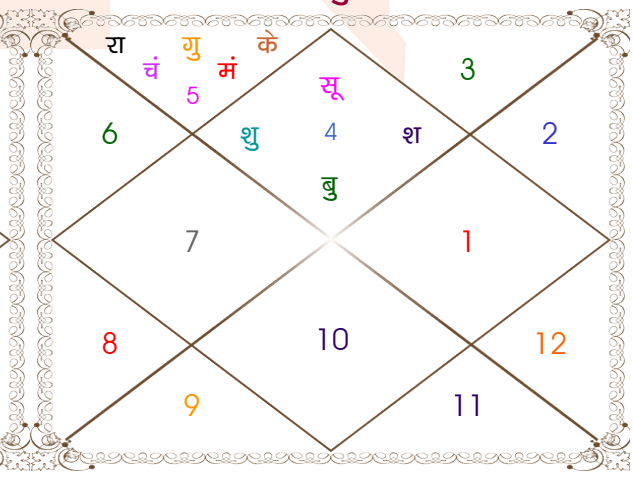

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

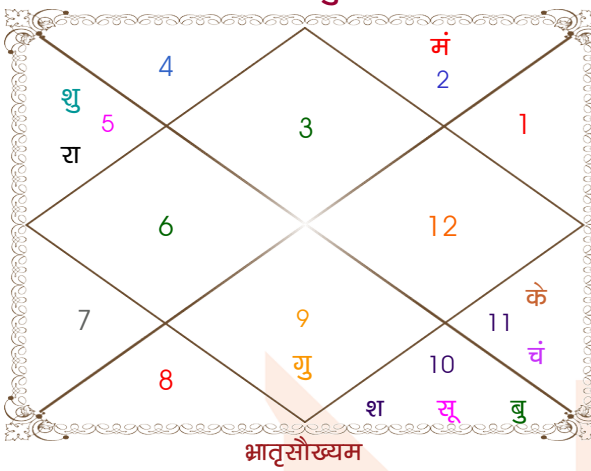

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

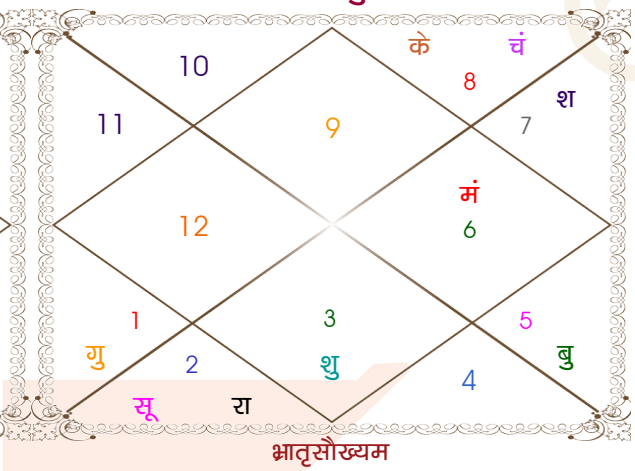

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

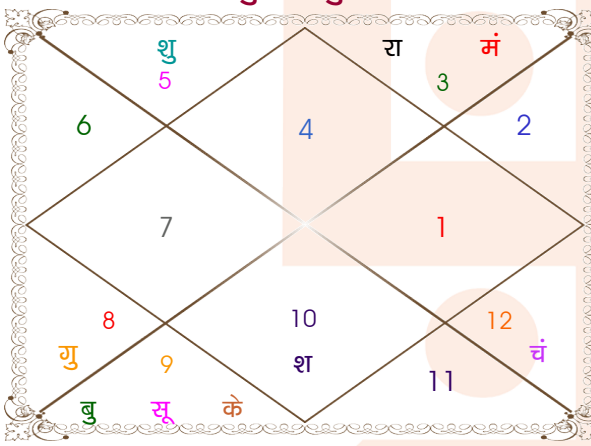

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

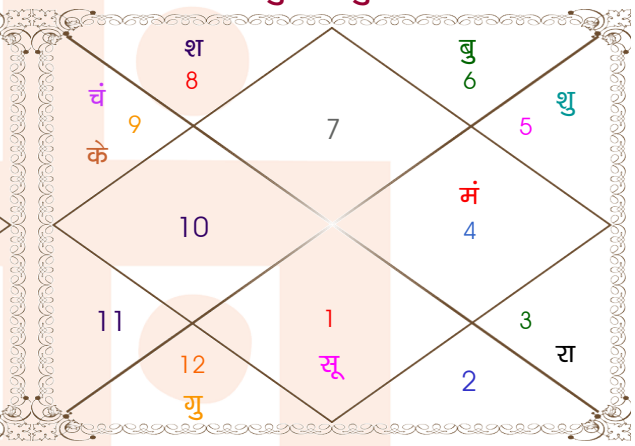

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

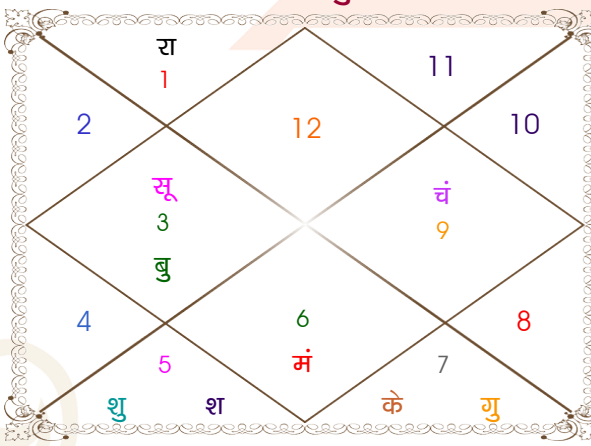

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

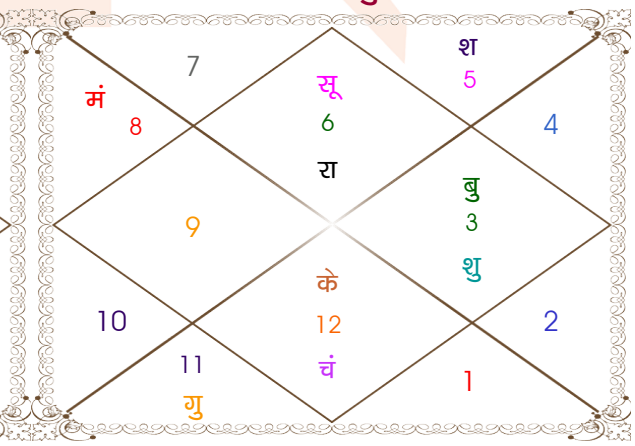

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

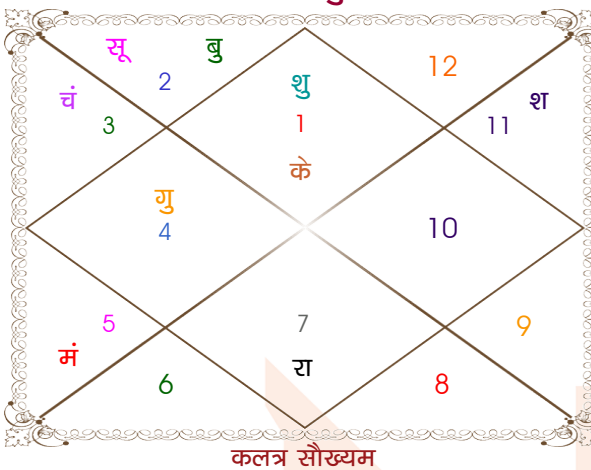

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

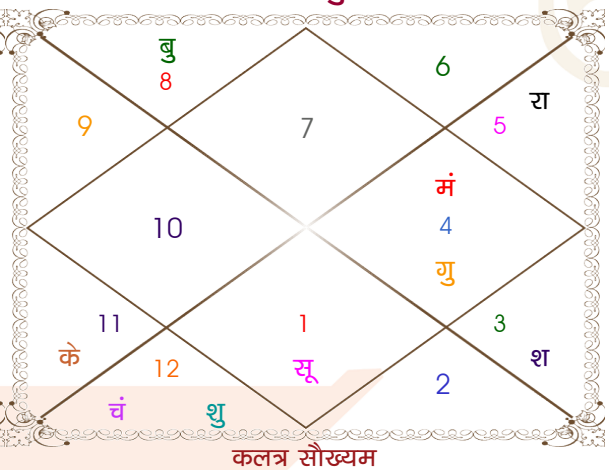

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

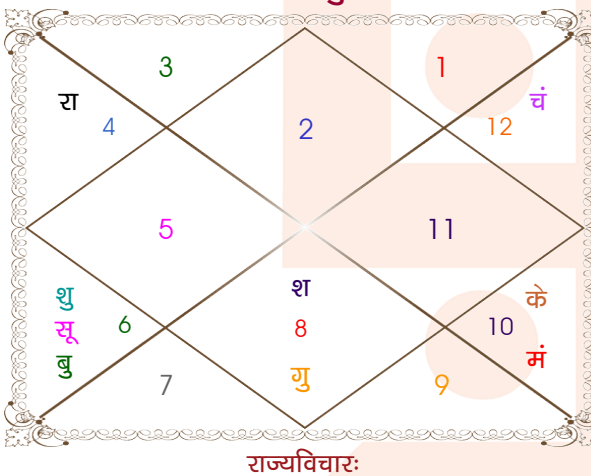

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

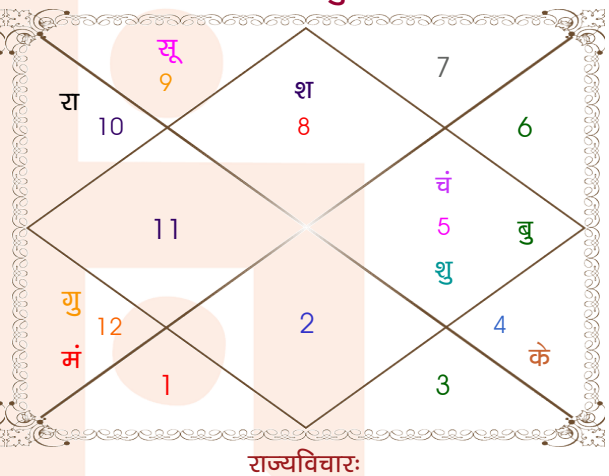

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

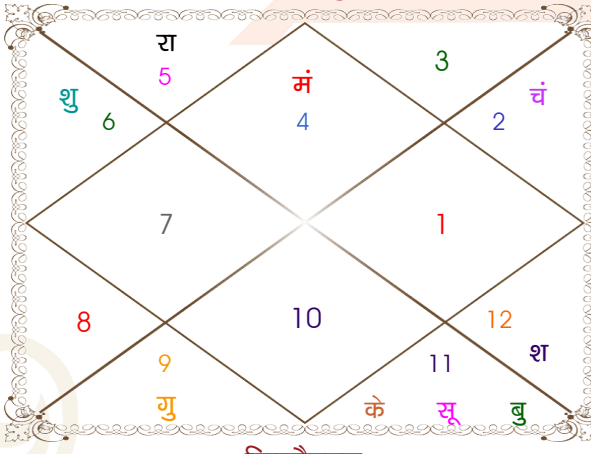

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

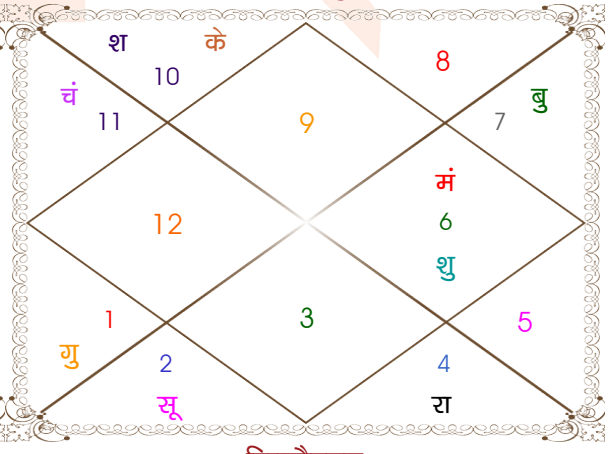

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

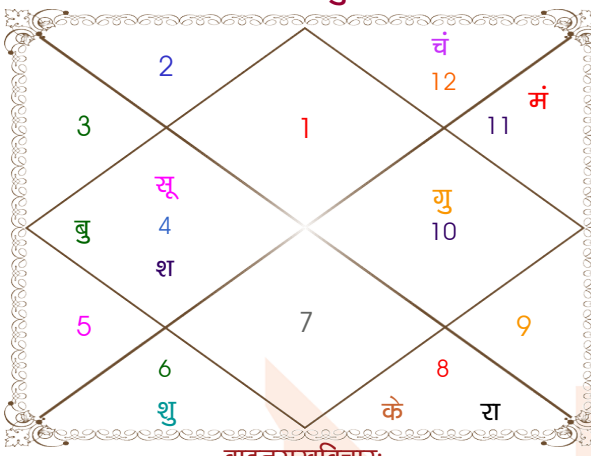

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

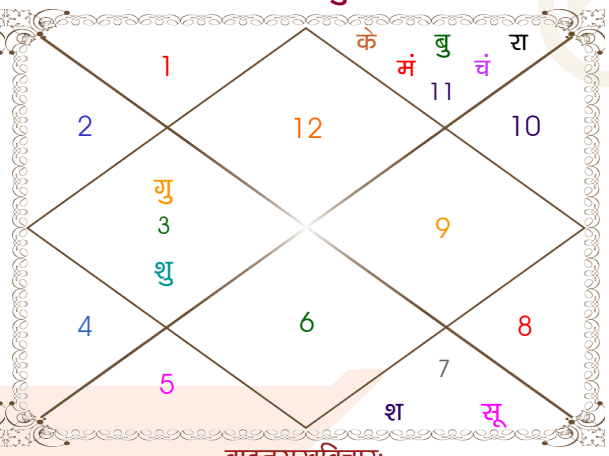

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

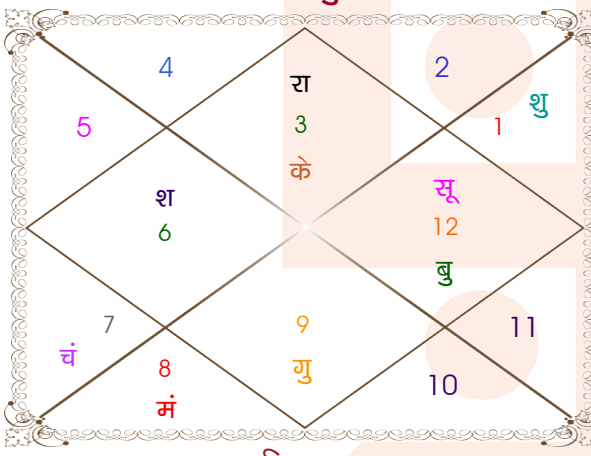

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

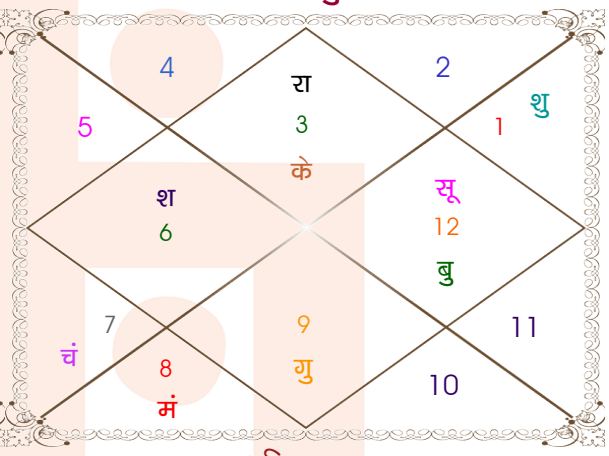

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

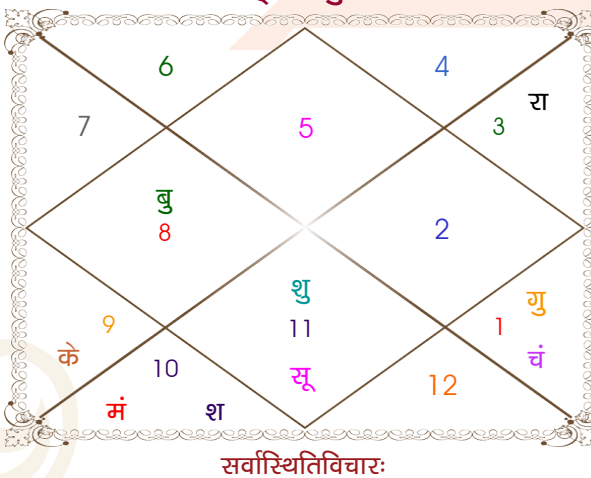

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

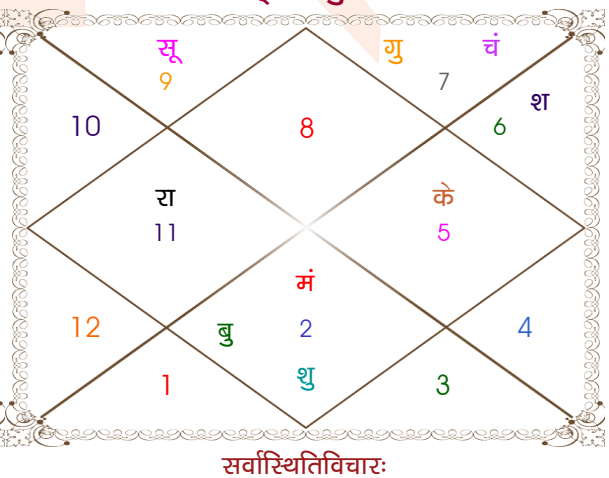

सर्वास्थितिविचारः

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : गुरु 4 वर्ष 8 मास 21 दिन

के.पी. अयनांश : 23:38:18

फॉरच्युना : सिंह 08:01:33

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	14:47:47	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
चंद्र		मिथु	29:23:44	बुध	गुरु	सूर्य	शुक्र
मंगल		कन्या	26:31:58	बुध	मंगल	गुरु	शनि
बुध		कन्या	13:33:54	बुध	चंद्र	राहु	सूर्य
गुरु		सिंह	10:27:15	सूर्य	केतु	शनि	सूर्य
शुक्र		सिंह	03:20:50	सूर्य	केतु	सूर्य	शनि
शनि	व	मक	06:33:45	शनि	सूर्य	बुध	गुरु
राहु	व	धनु	21:30:28	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
केतु	व	मिथु	21:30:28	बुध	गुरु	गुरु	मंगल
हर्ष		धनु	16:15:59	गुरु	शुक्र	चंद्र	चंद्र
नेप		धनु	20:21:34	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
प्लूटो		तुला	25:04:05	शुक्र	गुरु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	23:25:36	शुक्र	गुरु	शनि	राहु
2	वृश्चि	22:47:27	मंगल	बुध	चंद्र	शनि
3	धनु	24:05:35	गुरु	शुक्र	बुध	बुध
4	मक	26:56:52	शनि	मंगल	गुरु	केतु
5	कुंभ	29:12:53	शनि	गुरु	सूर्य	बुध
6	मीन	28:15:14	गुरु	बुध	शनि	बुध
7	मेष	23:25:36	मंगल	शुक्र	शनि	राहु
8	वृष	22:47:27	शुक्र	चंद्र	सूर्य	मंगल
9	मिथु	24:05:35	बुध	गुरु	बुध	बुध
10	कर्क	26:56:52	चंद्र	बुध	गुरु	केतु
11	सिंह	29:12:53	सूर्य	सूर्य	मंगल	चंद्र
12	कन्या	28:15:14	बुध	मंगल	शनि	बुध

भाव कुंडली

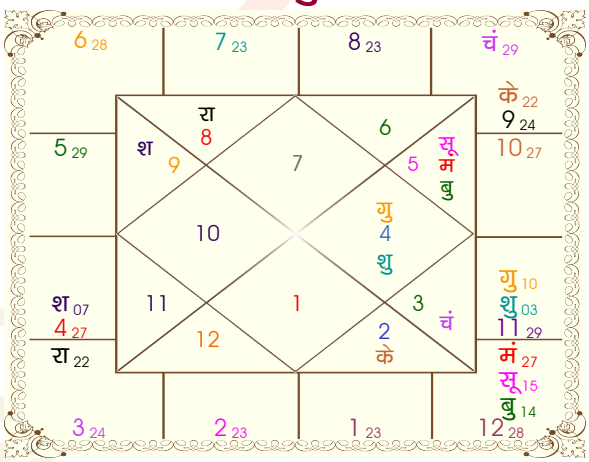

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 9 मास 24 दिन

के.पी. अयनांश : 23:41:54

फॉरच्युना : कर्क 07:49:23

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	11:52:33	शनि	चंद्र	मंगल	चंद्र
चंद्र		मीन	27:47:27	गुरु	बुध	गुरु	राहु
मंगल		मक	20:18:38	शनि	चंद्र	केतु	शनि
बुध	व	धनु	26:37:46	गुरु	शुक्र	केतु	बुध
गुरु		धनु	11:21:31	गुरु	केतु	शनि	गुरु
शुक्र		कुंभ	19:44:34	शनि	राहु	मंगल	केतु
शनि		कुंभ	27:49:00	शनि	गुरु	शुक्र	गुरु
राहु		कन्या	26:37:52	बुध	मंगल	गुरु	बुध
केतु		मीन	26:37:52	गुरु	बुध	गुरु	बुध
हर्ष		मक	07:07:22	शनि	सूर्य	केतु	शुक्र
नेप		मक	01:55:59	शनि	सूर्य	गुरु	बुध
प्लूटो		वृश्चि	08:57:46	मंगल	शनि	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	21:54:28	मंगल	शुक्र	शनि	शनि
2	वृष	20:15:24	शुक्र	चंद्र	केतु	शनि
3	मिथु	14:29:50	बुध	राहु	केतु	शुक्र
4	कर्क	08:59:41	चंद्र	शनि	शुक्र	राहु
5	सिंह	07:26:48	सूर्य	केतु	राहु	मंगल
6	कन्या	12:35:25	बुध	चंद्र	राहु	शनि
7	तुला	21:54:28	शुक्र	गुरु	शनि	शनि
8	वृश्चि	20:15:24	मंगल	बुध	शुक्र	राहु
9	धनु	14:29:50	गुरु	शुक्र	शुक्र	गुरु
10	मक	08:59:41	शनि	सूर्य	शुक्र	गुरु
11	कुंभ	07:26:48	शनि	राहु	राहु	शनि
12	मीन	12:35:25	गुरु	शनि	मंगल	बुध

भाव कुंडली

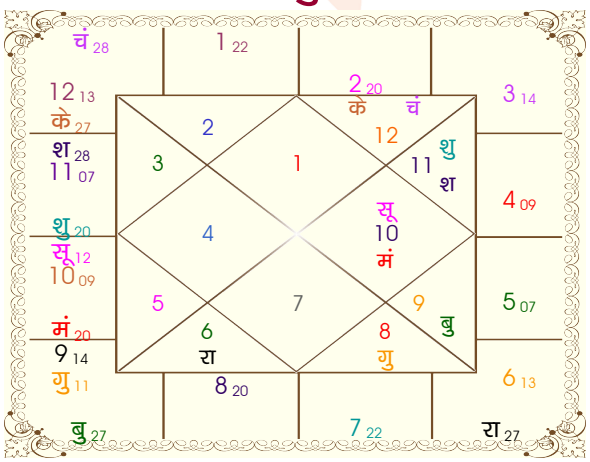

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- राहु-
2	मंगल, राहु,
3	चंद्र- गुरु- शनि, केतु-
4	शनि-
5	शनि-
6	चंद्र- गुरु- केतु-
7	मंगल,
8	गुरु, शुक्र+ राहु- केतु,
9	सूर्य, चंद्र, बुध+
10	सूर्य- चंद्र+ बुध- गुरु, शुक्र, राहु, केतु,
11	सूर्य, मंगल+ बुध, शनि+
12	बुध-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- राहु-
2	बुध- शुक्र-
3	चंद्र- बुध- केतु-
4	सूर्य- चंद्र- मंगल-
5	सूर्य-
6	चंद्र- बुध- शुक्र, राहु, केतु-
7	बुध- शुक्र-
8	मंगल- गुरु, शनि, राहु-
9	चंद्र, बुध, गुरु- शनि- केतु,
10	सूर्य, मंगल, शनि- राहु,
11	बुध, शुक्र, शनि,
12	सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु+ शनि- केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	9, 10- 11,
चंद्र	3- 6- 9, 10+
मंगल	2, 7, 11+
बुध	9+ 10- 11, 12-
गुरु	3- 6- 8, 10,
शुक्र	1- 8+ 10,
शनि	3, 4- 5- 11+
राहु	1- 2, 8- 10,
केतु	3- 6- 8, 10,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 10, 12,
चंद्र	3- 4- 6- 9, 12,
मंगल	1- 4- 8- 10, 12,
बुध	2- 3- 6- 7- 9, 11,
गुरु	8, 9- 12+
शुक्र	2- 6, 7- 11,
शनि	8, 9- 10- 11, 12-
राहु	1- 6, 8- 10,
केतु	3- 6- 9, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

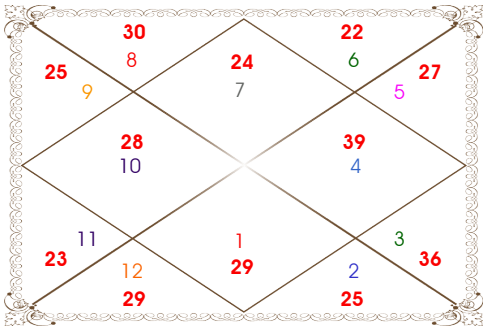

सर्वाष्टकवर्ग

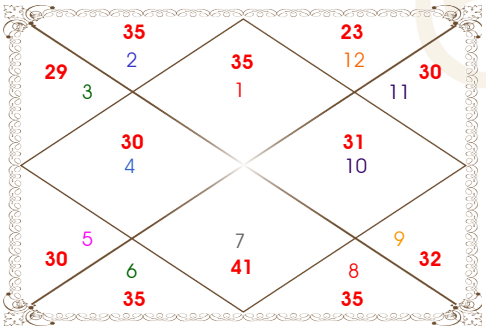

SAKET AGARWAL

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	2	6	6	4	1	2	3	3	4	2	3	39
गुरु	5	5	7	5	2	5	6	3	6	3	4	5	56
मंगल	3	1	4	7	3	2	3	4	2	5	2	3	39
सूर्य	5	3	4	6	4	4	3	3	4	5	3	4	48
शुक्र	5	7	4	4	6	3	4	5	4	3	4	3	52
बुध	4	4	4	7	5	5	4	5	2	6	3	5	54
चंद्र	4	3	7	4	3	2	2	7	4	2	5	6	49
बिन्दु	29	25	36	39	27	22	24	30	25	28	23	29	337
रेखा	27	31	20	17	29	34	32	26	31	28	33	27	335

CHANDANI AGARWAL

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	4	5	5	2	2	4	5	3	6	5	3	5	49
सूर्य	4	4	1	4	7	5	5	4	2	5	5	2	48
चंद्र	3	3	7	4	3	5	5	4	5	2	3	5	49
मंगल	3	5	2	2	3	4	5	4	2	4	4	1	39
बुध	5	6	3	3	4	6	6	6	5	3	5	2	54
गुरु	6	2	3	7	4	5	6	4	4	7	4	4	56
शुक्र	6	6	5	3	4	4	5	6	5	1	4	3	52
शनि	4	4	3	5	3	2	4	4	3	4	2	1	39
बिन्दु	35	35	29	30	30	35	41	35	32	31	30	23	386
रेखा	29	29	35	34	34	29	23	29	32	33	34	41	382

शोध्य पिंड - SAKET AGARWAL

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	54	127	74	82	105	79	79
ग्रह पिंड	33	25	65	84	51	34	52
शोध्य पिंड	87	152	139	166	156	113	131

शोध्य पिंड - CHANDANI AGARWAL

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	125	140	86	68	65	98	69	49
ग्रह पिंड	88	61	35	24	39	77	15	26
शोध्य पिंड	213	201	121	92	104	175	84	75

विंशोत्तरी दशा

गुरु 4 वर्ष 10 मास 7 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
02/10/1991		09/08/1996		10/08/2015	
09/08/1996		10/08/2015		09/08/2032	
	00/00/0000	शनि	13/08/1999	बुध	06/01/2018
	00/00/0000	बुध	22/04/2002	केतु	03/01/2019
	00/00/0000	केतु	01/06/2003	शुक्र	03/11/2021
	00/00/0000	शुक्र	31/07/2006	सूर्य	09/09/2022
	02/10/1991	सूर्य	13/07/2007	चंद्र	08/02/2024
सूर्य	10/12/1991	चंद्र	11/02/2009	मंगल	05/02/2025
चंद्र	10/04/1993	मंगल	23/03/2010	राहु	25/08/2027
मंगल	17/03/1994	राहु	27/01/2013	गुरु	30/11/2029
राहु	09/08/1996	गुरु	10/08/2015	शनि	09/08/2032

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
09/08/2032		10/08/2039		10/08/2059	
10/08/2039		10/08/2059		09/08/2065	
केतु	05/01/2033	शुक्र	09/12/2042	सूर्य	27/11/2059
शुक्र	07/03/2034	सूर्य	10/12/2043	चंद्र	28/05/2060
सूर्य	13/07/2034	चंद्र	09/08/2045	मंगल	03/10/2060
चंद्र	11/02/2035	मंगल	09/10/2046	राहु	28/08/2061
मंगल	10/07/2035	राहु	09/10/2049	गुरु	16/06/2062
राहु	28/07/2036	गुरु	09/06/2052	शनि	29/05/2063
गुरु	04/07/2037	शनि	10/08/2055	बुध	03/04/2064
शनि	13/08/2038	बुध	10/06/2058	केतु	09/08/2064
बुध	10/08/2039	केतु	10/08/2059	शुक्र	09/08/2065

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
09/08/2065		10/08/2075		10/08/2082	
10/08/2075		10/08/2082		10/08/2100	
चंद्र	10/06/2066	मंगल	06/01/2076	राहु	22/04/2085
मंगल	09/01/2067	राहु	24/01/2077	गुरु	15/09/2087
राहु	10/07/2068	गुरु	30/12/2077	शनि	22/07/2090
गुरु	09/11/2069	शनि	08/02/2079	बुध	08/02/2093
शनि	10/06/2071	बुध	05/02/2080	केतु	26/02/2094
बुध	08/11/2072	केतु	04/07/2080	शुक्र	26/02/2097
केतु	09/06/2073	शुक्र	03/09/2081	सूर्य	21/01/2098
शुक्र	08/02/2075	सूर्य	09/01/2082	चंद्र	23/07/2099
सूर्य	10/08/2075	चंद्र	10/08/2082	मंगल	10/08/2100

बुध 2 वर्ष 11 मास 12 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
26/01/1996		08/01/1999		08/01/2006	
08/01/1999		08/01/2006		08/01/2026	
	00/00/0000	केतु	06/06/1999	शुक्र	09/05/2009
	00/00/0000	शुक्र	05/08/2000	सूर्य	10/05/2010
	00/00/0000	सूर्य	11/12/2000	चंद्र	08/01/2012
	00/00/0000	चंद्र	12/07/2001	मंगल	10/03/2013
	00/00/0000	मंगल	08/12/2001	राहु	09/03/2016
	00/00/0000	राहु	27/12/2002	गुरु	08/11/2018
	26/01/1996	गुरु	03/12/2003	शनि	08/01/2022
गुरु	30/04/1996	शनि	11/01/2005	बुध	08/11/2024
शनि	08/01/1999	बुध	08/01/2006	केतु	08/01/2026

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
08/01/2026		08/01/2032		08/01/2042	
08/01/2032		08/01/2042		08/01/2049	
सूर्य	27/04/2026	चंद्र	08/11/2032	मंगल	06/06/2042
चंद्र	27/10/2026	मंगल	09/06/2033	राहु	25/06/2043
मंगल	04/03/2027	राहु	09/12/2034	गुरु	30/05/2044
राहु	27/01/2028	गुरु	09/04/2036	शनि	09/07/2045
गुरु	14/11/2028	शनि	08/11/2037	बुध	06/07/2046
शनि	27/10/2029	बुध	09/04/2039	केतु	03/12/2046
बुध	02/09/2030	केतु	09/11/2039	शुक्र	02/02/2048
केतु	08/01/2031	शुक्र	09/07/2041	सूर्य	09/06/2048
शुक्र	08/01/2032	सूर्य	08/01/2042	चंद्र	08/01/2049

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
08/01/2049		08/01/2067		08/01/2083	
08/01/2067		08/01/2083		09/01/2102	
राहु	21/09/2051	गुरु	25/02/2069	शनि	11/01/2086
गुरु	13/02/2054	शनि	09/09/2071	बुध	20/09/2088
शनि	20/12/2056	बुध	15/12/2073	केतु	30/10/2089
बुध	10/07/2059	केतु	20/11/2074	शुक्र	30/12/2092
केतु	27/07/2060	शुक्र	21/07/2077	सूर्य	11/12/2093
शुक्र	28/07/2063	सूर्य	10/05/2078	चंद्र	13/07/2095
सूर्य	21/06/2064	चंद्र	09/09/2079	मंगल	21/08/2096
चंद्र	21/12/2065	मंगल	15/08/2080	राहु	28/06/2099
मंगल	08/01/2067	राहु	08/01/2083	गुरु	09/01/2102

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
05/02/2025		25/08/2027		30/11/2029	
25/08/2027		30/11/2029		09/08/2032	
राहु	24/06/2025	गुरु	13/12/2027	शनि	05/05/2030
गुरु	27/10/2025	शनि	23/04/2028	बुध	21/09/2030
शनि	23/03/2026	बुध	18/08/2028	केतु	17/11/2030
बुध	02/08/2026	केतु	05/10/2028	शुक्र	30/04/2031
केतु	25/09/2026	शुक्र	20/02/2029	सूर्य	18/06/2031
शुक्र	28/02/2027	सूर्य	03/04/2029	चंद्र	08/09/2031
सूर्य	15/04/2027	चंद्र	11/06/2029	मंगल	05/11/2031
चंद्र	02/07/2027	मंगल	29/07/2029	राहु	31/03/2032
मंगल	25/08/2027	राहु	30/11/2029	गुरु	09/08/2032

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
08/11/2024		08/01/2026		27/04/2026	
08/01/2026		27/04/2026		27/10/2026	
केतु	03/12/2024	सूर्य	13/01/2026	चंद्र	13/05/2026
शुक्र	12/02/2025	चंद्र	22/01/2026	मंगल	23/05/2026
सूर्य	05/03/2025	मंगल	29/01/2026	राहु	20/06/2026
चंद्र	09/04/2025	राहु	14/02/2026	गुरु	14/07/2026
मंगल	04/05/2025	गुरु	01/03/2026	शनि	12/08/2026
राहु	07/07/2025	शनि	18/03/2026	बुध	07/09/2026
गुरु	02/09/2025	बुध	03/04/2026	केतु	18/09/2026
शनि	09/11/2025	केतु	09/04/2026	शुक्र	18/10/2026
बुध	08/01/2026	शुक्र	27/04/2026	सूर्य	27/10/2026

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
09/08/2032		05/01/2033		07/03/2034	
05/01/2033		07/03/2034		13/07/2034	
केतु	18/08/2032	शुक्र	17/03/2033	सूर्य	14/03/2034
शुक्र	12/09/2032	सूर्य	08/04/2033	चंद्र	24/03/2034
सूर्य	19/09/2032	चंद्र	13/05/2033	मंगल	01/04/2034
चंद्र	02/10/2032	मंगल	07/06/2033	राहु	20/04/2034
मंगल	10/10/2032	राहु	10/08/2033	गुरु	07/05/2034
राहु	02/11/2032	गुरु	06/10/2033	शनि	27/05/2034
गुरु	22/11/2032	शनि	12/12/2033	बुध	14/06/2034
शनि	15/12/2032	बुध	11/02/2034	केतु	22/06/2034
बुध	05/01/2033	केतु	07/03/2034	शुक्र	13/07/2034

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
27/10/2026		04/03/2027		27/01/2028	
04/03/2027		27/01/2028		14/11/2028	
मंगल	04/11/2026	राहु	22/04/2027	गुरु	06/03/2028
राहु	23/11/2026	गुरु	05/06/2027	शनि	21/04/2028
गुरु	10/12/2026	शनि	27/07/2027	बुध	01/06/2028
शनि	30/12/2026	बुध	12/09/2027	केतु	18/06/2028
बुध	17/01/2027	केतु	01/10/2027	शुक्र	06/08/2028
केतु	25/01/2027	शुक्र	25/11/2027	सूर्य	21/08/2028
शुक्र	15/02/2027	सूर्य	11/12/2027	चंद्र	14/09/2028
सूर्य	21/02/2027	चंद्र	07/01/2028	मंगल	01/10/2028
चंद्र	04/03/2027	मंगल	27/01/2028	राहु	14/11/2028

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
13/07/2034		11/02/2035		10/07/2035	
11/02/2035		10/07/2035		28/07/2036	
चंद्र	31/07/2034	मंगल	20/02/2035	राहु	06/09/2035
मंगल	12/08/2034	राहु	14/03/2035	गुरु	27/10/2035
राहु	13/09/2034	गुरु	03/04/2035	शनि	27/12/2035
गुरु	12/10/2034	शनि	27/04/2035	बुध	19/02/2036
शनि	15/11/2034	बुध	18/05/2035	केतु	13/03/2036
बुध	15/12/2034	केतु	27/05/2035	शुक्र	15/05/2036
केतु	27/12/2034	शुक्र	21/06/2035	सूर्य	04/06/2036
शुक्र	01/02/2035	सूर्य	28/06/2035	चंद्र	06/07/2036
सूर्य	11/02/2035	चंद्र	10/07/2035	मंगल	28/07/2036

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
14/11/2028		27/10/2029		02/09/2030	
27/10/2029		02/09/2030		08/01/2031	
शनि	08/01/2029	बुध	10/12/2029	केतु	10/09/2030
बुध	26/02/2029	केतु	28/12/2029	शुक्र	01/10/2030
केतु	18/03/2029	शुक्र	18/02/2030	सूर्य	07/10/2030
शुक्र	15/05/2029	सूर्य	05/03/2030	चंद्र	18/10/2030
सूर्य	01/06/2029	चंद्र	31/03/2030	मंगल	26/10/2030
चंद्र	30/06/2029	मंगल	18/04/2030	राहु	14/11/2030
मंगल	21/07/2029	राहु	04/06/2030	गुरु	01/12/2030
राहु	11/09/2029	गुरु	15/07/2030	शनि	21/12/2030
गुरु	27/10/2029	शनि	02/09/2030	बुध	08/01/2031

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
28/07/2036		04/07/2037		13/08/2038	
04/07/2037		13/08/2038		10/08/2039	
गुरु	11/09/2036	शनि	06/09/2037	बुध	03/10/2038
शनि	04/11/2036	बुध	02/11/2037	केतु	24/10/2038
बुध	23/12/2036	केतु	26/11/2037	शुक्र	23/12/2038
केतु	12/01/2037	शुक्र	01/02/2038	सूर्य	11/01/2039
शुक्र	09/03/2037	सूर्य	22/02/2038	चंद्र	10/02/2039
सूर्य	26/03/2037	चंद्र	27/03/2038	मंगल	03/03/2039
चंद्र	24/04/2037	मंगल	20/04/2038	राहु	26/04/2039
मंगल	14/05/2037	राहु	20/06/2038	गुरु	14/06/2039
राहु	04/07/2037	गुरु	13/08/2038	शनि	10/08/2039

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
08/01/2031		08/01/2032		08/11/2032	
08/01/2032		08/11/2032		09/06/2033	
शुक्र	10/03/2031	चंद्र	03/02/2032	मंगल	20/11/2032
सूर्य	28/03/2031	मंगल	21/02/2032	राहु	22/12/2032
चंद्र	28/04/2031	राहु	06/04/2032	गुरु	20/01/2033
मंगल	19/05/2031	गुरु	17/05/2032	शनि	22/02/2033
राहु	13/07/2031	शनि	04/07/2032	बुध	24/03/2033
गुरु	31/08/2031	बुध	16/08/2032	केतु	06/04/2033
शनि	27/10/2031	केतु	03/09/2032	शुक्र	11/05/2033
बुध	18/12/2031	शुक्र	24/10/2032	सूर्य	22/05/2033
केतु	08/01/2032	सूर्य	08/11/2032	चंद्र	09/06/2033

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
10/08/2039		09/12/2042		10/12/2043	
09/12/2042		10/12/2043		09/08/2045	
शुक्र	29/02/2040	सूर्य	28/12/2042	चंद्र	29/01/2044
सूर्य	30/04/2040	चंद्र	27/01/2043	मंगल	05/03/2044
चंद्र	09/08/2040	मंगल	17/02/2043	राहु	04/06/2044
मंगल	19/10/2040	राहु	13/04/2043	गुरु	24/08/2044
राहु	20/04/2041	गुरु	01/06/2043	शनि	29/11/2044
गुरु	29/09/2041	शनि	29/07/2043	बुध	23/02/2045
शनि	10/04/2042	बुध	18/09/2043	केतु	30/03/2045
बुध	29/09/2042	केतु	10/10/2043	शुक्र	10/07/2045
केतु	09/12/2042	शुक्र	10/12/2043	सूर्य	09/08/2045

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
09/06/2033		09/12/2034		09/04/2036	
09/12/2034		09/04/2036		08/11/2037	
राहु	30/08/2033	गुरु	12/02/2035	शनि	09/07/2036
गुरु	11/11/2033	शनि	30/04/2035	बुध	29/09/2036
शनि	06/02/2034	बुध	08/07/2035	केतु	02/11/2036
बुध	24/04/2034	केतु	05/08/2035	शुक्र	06/02/2037
केतु	26/05/2034	शुक्र	25/10/2035	सूर्य	07/03/2037
शुक्र	26/08/2034	सूर्य	19/11/2035	चंद्र	24/04/2037
सूर्य	22/09/2034	चंद्र	29/12/2035	मंगल	28/05/2037
चंद्र	07/11/2034	मंगल	27/01/2036	राहु	23/08/2037
मंगल	09/12/2034	राहु	09/04/2036	गुरु	08/11/2037

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
09/08/2045		09/10/2046		09/10/2049	
09/10/2046		09/10/2049		09/06/2052	
मंगल	03/09/2045	राहु	23/03/2047	गुरु	16/02/2050
राहु	06/11/2045	गुरु	16/08/2047	शनि	20/07/2050
गुरु	02/01/2046	शनि	05/02/2048	बुध	05/12/2050
शनि	10/03/2046	बुध	10/07/2048	केतु	31/01/2051
बुध	10/05/2046	केतु	12/09/2048	शुक्र	12/07/2051
केतु	04/06/2046	शुक्र	13/03/2049	सूर्य	30/08/2051
शुक्र	14/08/2046	सूर्य	07/05/2049	चंद्र	19/11/2051
सूर्य	04/09/2046	चंद्र	06/08/2049	मंगल	15/01/2052
चंद्र	09/10/2046	मंगल	09/10/2049	राहु	09/06/2052

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
08/11/2037		09/04/2039		09/11/2039	
09/04/2039		09/11/2039		09/07/2041	
बुध	20/01/2038	केतु	22/04/2039	शुक्र	18/02/2040
केतु	19/02/2038	शुक्र	27/05/2039	सूर्य	19/03/2040
शुक्र	17/05/2038	सूर्य	07/06/2039	चंद्र	09/05/2040
सूर्य	12/06/2038	चंद्र	25/06/2039	मंगल	14/06/2040
चंद्र	25/07/2038	मंगल	07/07/2039	राहु	13/09/2040
मंगल	24/08/2038	राहु	08/08/2039	गुरु	03/12/2040
राहु	10/11/2038	गुरु	06/09/2039	शनि	10/03/2041
गुरु	18/01/2039	शनि	09/10/2039	बुध	04/06/2041
शनि	09/04/2039	बुध	09/11/2039	केतु	09/07/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

2	मूलांक	8
5	भाग्यांक	7
2, 7, 8, 5	मित्र अंक	1, 2, 8, 7
4, 6	शत्रु अंक	3, 9
20,29,38,47,56	शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
कन्या, कुम्भ	मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मकर, मिथुन, सिंह	मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
गणेश	अनुकूल देवता	जगदम्बा
हीरा	शुभ रत्न	मूंगा
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगमूंगी
पन्ना	भाग्य रत्न	पुखराज
रजत	शुभ धातु	ताम्र
रजत	शुभ रंग	रक्त
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	दक्षिण
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
चावल	दान अन्न	मल्का
दूध	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

SAKET AGARWAL

जीवन रत्नः	हीरा	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पन्ना	कम खर्च, भाग्योदय
कारक रत्नः	नीलम	सुख, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	मोती	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति

CHANDANI AGARWAL

जीवन रत्नः	मूंगा	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
भाग्य रत्नः	पुखराज	भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	माणिक्य	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/10/1991-06/03/1993
साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/01/1996-16/04/1998
साढेसाती तृतीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/07/2002-05/09/2004
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/07/2022-24/03/2025
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती तृतीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/05/2032-06/07/2034
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/02/2052-09/09/2054
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती तृतीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/07/2061-15/02/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

SAKET AGARWAL

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें।

जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

CHANDANI AGARWAL

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग अनुदित रूप में विद्यमान है। लेकिन यह राहु/केतु के साथ सूर्य/चन्द्र होने के कारण विशेष प्रभावशाली है। फलस्वरूप जातक रोग व्याधि से ग्रसित रहता है। चाहे कितना इलाज कराये, पर बीमारी ठीक नहीं होती। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है। जातक यात्रा बहुत करता पर सफलता कहीं नहीं मिलती। जातक प्रेम प्रकरण में सर्वथा असफल रहता है। जातक को मनोनुकूल स्त्री नहीं मिलती है। परिणामस्वरूप वैवाहिक जीवन दुःखमय व्यतीत होता है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के मन में निराशा की भावना जागृत हो उठती है और शत्रुता भी मन में पालकर रखने वाले हो जाते हैं। जातक राजदण्ड का भागीदार बन जाता है। उसका जीवन शत्रुओं के षडयन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में शत्रुओं को विजय हासिल होती है और यहाँ तक कि जातक को जेल जाने की नौबत आ जाती है।

इस योग के कारण जातक का चरित्र संदेहास्पद रहता है और धर्म की हानि होती है। जीवनपर्यन्त शोक सन्तप्त एवं दुःख आदि से घिरा रहता है एवं समय-समय पर बुरा स्वप्न भी देखता है उदाहरण के रूप में सर्प, डरावने दृश्य, फाँसी लगाना, काटना आदि। जातक का आत्मबल कमजोर होता है। इस योग के प्रभाव से जातक के आर्थिक स्थिति नाजुक होती है

क्योंकि आय की अपेक्षा व्यय की बहुलता रहती है। जिस कारण आर्थिक संकट घेर लेता है।

इस योग से प्रभावित जातक को थलसेना में कदापि नहीं जाना चाहिए। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. शुभ मुहूर्त में शिवलिंग पर ताम्बे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक समर्पित करें।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें।
4. शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार के दिन यमुना जी या बहते पानी में प्रवाहित करें।
5. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित लहसुनिया धारण करें।
7. केतु मन्त्र का 18 अट्ठारह हजार (18000) जप करें या करवायें। केतु की दशा अन्तर्दशा में करवाना अधिक श्रेयष्कर है।
8. एक वर्ष तक गणपत्यथर्वशीर्ष का नित्यपाठ करें।
9. कम्बल, धूम्रवस्त्र, शस्त्र, सप्तधान्य, तेल आदि शुभ मुहूर्त्त में समय-समय पर दान करें।
10. सात शनिवार को देवदारु, सरसों तथा लोहवान इन तीनों को उबाल कर स्नान करें।
11. शयनकक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग जीवन भर करें।
12. सर्वतो भद्र मण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मार्जार	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

कुल : **27 / 36**

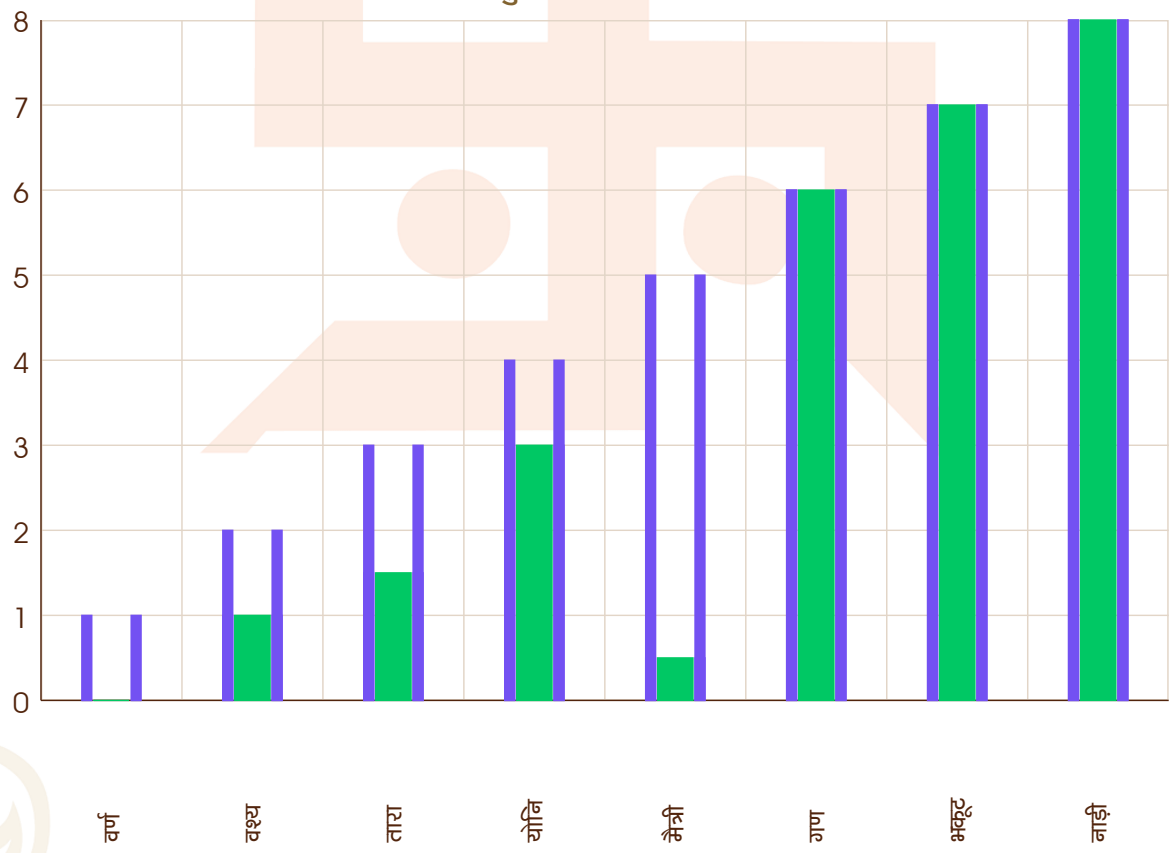

अष्टकूट मिलान

SAKET AGARWAL का वर्ग मेष है तथा CHANDANI AGARWAL का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

SAKET AGARWAL मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल SAKET AGARWAL कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

CHANDANI AGARWAL मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु CHANDANI AGARWAL कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

SAKET AGARWAL तथा CHANDANI AGARWAL में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

SAKET AGARWAL का वर्ण शूद्र है तथा CHANDANI AGARWAL का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि CHANDANI AGARWAL का वर्ण SAKET AGARWAL के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच हमेशा अहं का टकराव होगा। CHANDANI AGARWAL हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रसित रहेगी तथा हमेशा स्वयं को पति से अधिक होशियार समझती रहेगी। कन्या की यही श्रेष्ठता का स्व अहसास उसके पति एवं बच्चों के विकास को बाधित कर रहेगा। साथ ही SAKET AGARWAL के अन्दर हीन भावना घर कर जायेगी।

वश्य

SAKET AGARWAL का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं CHANDANI AGARWAL का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें SAKET AGARWAL एवं CHANDANI AGARWAL दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः SAKET AGARWAL CHANDANI AGARWAL पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि SAKET AGARWAL हमेश CHANDANI AGARWAL के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

SAKET AGARWAL की तारा मित्र तथा CHANDANI AGARWAL की तारा विपत है। CHANDANI AGARWAL की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान SAKET AGARWAL एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि CHANDANI AGARWAL का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

SAKET AGARWAL की योनि मार्जार है तथा CHANDANI AGARWAL की योनि गज है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में

साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में SAKET AGARWAL का राशि स्वामी CHANDANI AGARWAL के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि CHANDANI AGARWAL का राशि स्वामी SAKET AGARWAL के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

SAKET AGARWAL का गण देव तथा CHANDANI AGARWAL का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

SAKET AGARWAL से CHANDANI AGARWAL की राशि दशम भाव में स्थित है तथा CHANDANI AGARWAL से SAKET AGARWAL की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण SAKET AGARWAL एक पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा अपनी पत्नी एवं बच्चों समेत परिवार के हर सदस्य की देखभाल करेंगे। उन्हें अपने संबंधियों से ही खुशी प्राप्त होगी तथा उनकी पत्नी सदैव कर्त्तव्यों के निर्वहन में उनकी मदद करती रहेंगी। CHANDANI AGARWAL को घर, वाहन, मां का प्यार समेत जीवन में हर सुख एवं खुशी प्राप्त होगी। CHANDANI AGARWAL हमेशा अपने पति की परछाईं बनकर सदैव उनकी सहायता करती रहेंगी।

नाड़ी

SAKET AGARWAL की नाड़ी आद्य है तथा CHANDANI AGARWAL की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों

वात एवं कफ का संतुलन होता है। SAKET AGARWAL की आद्य नाड़ी तथा CHANDANI AGARWAL की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

SAKET AGARWAL की जन्मराशि वायुतत्व युक्त मिथुन है तथा CHANDANI AGARWAL की जन्मराशि जलतत्व युक्त मीन है नैसर्गिक रूप से वायु एवं जल के मध्य असमानता एवं शत्रुता का भाव रहता है। अतः SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL के मध्य स्वभावगत विषमताओं के कारण सम्बंधो में अल्प मधुरता रहेगी तथा दाम्पत्य सुख में भी न्यूनता रहेगी। अतः मिलान उत्तम नहीं रहेगा।

SAKET AGARWAL की राशि का स्वामी बुध तथा CHANDANI AGARWAL की राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर शत्रु एवं समभाव में पड़ते है। अतः यह ग्रह स्थिति भी विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगी। ऐसी स्थिति में SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL परस्पर एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करेंगे तथा कमियों पर विशेष ध्यान देगे तथा परस्पर वाद विवाद एवं अशान्ति का वातावरण बनाएगें। इससे पारिवारिक सुख की अनुभूति में व्यवधान रहेगा। अतः बुद्धिमता से कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL की राशियाँ परस्पर दशम तथा चतुर्थ भाव में पड़ती है। यह शुभ भकुट माना जाता है। इसके प्रभाव से SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL में दूरदर्शिता का भाव रहेगा। वे एक दूसरे को स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे जिससे आपसी सम्बंधों में मधुरता आएगी। साथ ही पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा परस्पर सामंजस्य रहेगा।

SAKET AGARWAL का वश्य मानव तथा CHANDANI AGARWAL का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता एवं शत्रुता का भाव रहता है। अतः SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL के मध्य शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर असमानताएं रहेंगी जिससे उनके सम्बंधो में मधुरता का अल्पभाव रहेगा। वे एक दूसरे की कामभावनाओं में को सन्तुष्ट करने में भी असमर्थ रहेंगे।

SAKET AGARWAL का वर्ण शूद्र तथा CHANDANI AGARWAL का वर्ण ब्राह्मण है। अतः दोनों की कार्य क्षमताओं में भिन्नता रहेगी। SAKET AGARWAL की प्रवृति किसी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम से करने की होगी लेकिन CHANDANI AGARWAL शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो को ही सम्पन्न करेगी।

धन

SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन SAKET AGARWAL पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त SAKET AGARWAL की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

SAKET AGARWAL की नाड़ी आद्य तथा CHANDANI AGARWAL की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं रहेगा जिससे किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा परन्तु मंगल का CHANDANI AGARWAL के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव होगा जिससे उनको गर्भपात संबंधी परेशानी की संभावना होगी तथा धातु संबंधी रोगों से भी यदा कदा कष्ट की प्राप्ति होगी। साथ ही मासिक धर्म संबंधी परेशानी का भी यदा कदा सामना करना पड़ेगा। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए CHANDANI AGARWAL को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL को उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगा तथा कन्या संतति की अपेक्षा पुत्र संतति अधिक रहेगी।

प्रसव संबंधी कष्ट के लिए आप को किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। इनका प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा इससे संबधित कोई भी समस्या नहीं होगी। CHANDANI AGARWAL सुदंर एवं स्वस्थ बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी पूर्ण रूपेण स्वस्थता की अनुभूति करेंगी। इससे SAKET AGARWAL और उसके परिवार के सभी सदस्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL की संततियां व्यवहारकुशल एवं माता पिता के लिए आज्ञाकारी रहेंगी तथा अपने बच्चों की प्रगति से दोनों सन्तुष्टि एवं आनंद की अनुभूति करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी वे स्वपरिश्रम योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनके उत्कृष्ट कार्य कलापों से SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL अपने आप को भाग्यशाली समझेंगे। इनकी संततियां कभी भी उनकी इच्छा के विपरीत कोई भी कार्य नहीं करेंगी जिससे माता पिता को उन पर गर्व रहेगा। इस प्रकार सुदंर, आज्ञाकारी एवं बुद्धिमान संतति से युक्त होकर SAKET AGARWAL और CHANDANI AGARWAL का पारिवारिक जीवन सुख शांति एवं आनंद से व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

CHANDANI AGARWAL के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद CHANDANI AGARWAL अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं

सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से CHANDANI AGARWAL पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि CHANDANI AGARWAL अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

SAKET AGARWAL के सास से सामान्यतया मधुर संबध रहेंगे तथा उनके प्रति मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना विद्यमान रहेगी। साथ ही सास को अपनी माता के समान आदरणीया समझेंगे। वह सपत्नीक अवसरनुकूल ससुराल में उनसे मिलने भी जाया करेंगे तथा अपने मन में कभी श्रेष्ठता की भावना नहीं लाएंगे जिससे संबध अनुकूल रहेंगे।

ससुर के साथ में SAKET AGARWAL के संबध विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण उनके आपस में मतभेद होंगे लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य की प्रवृति एवं बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा मित्रता की भी भावना रहेगी जिससे एक दूसरे को समझने में सफल रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण SAKET AGARWAL के प्रति सकारात्मक रहेगा तथा SAKET AGARWAL भी मधुर संबधों को बनाने में नित्य यत्नशील रहेंगे।

SAKET AGARWAL

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

CHANDANI AGARWAL

आपका जन्म दिनांक 26 है। दो और छः के योग से आपका मूलांक आठ होता है। मूलांक 8 का स्वामी शनि ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक छः का शुक्र है। अतः आपके जीवन में अंक दो, छः एवं आठ के स्वामी ग्रह चन्द्र, शुक्र एवं शनि का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

मूलांक 8 के स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके प्रत्येक कार्य में रुकावटें अवश्य आयेंगी। लेकिन आप इनसे बिना विचलित हुए अपनी सफलता का मार्ग स्वयं के कठिन परिश्रम तथा बुद्धि विवेक एवं ज्ञान के द्वारा प्राप्त करेंगी। आलस्य आपके अन्दर अवगुण के रूप में रहेगा। इसी कारण कई बार आप सफलता प्राप्त करते-करते ऐसी चूक कर देंगी जिसका बाद में पछतावा होगा। शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपने जीवन मे कई महत्वपूर्ण एवं स्थायी उपलब्धियां अर्जित करेंगी। जिससे आपका सामाजिक स्तर ऊँचा होगा और आपको समाज में नाम, यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी। आपके कार्य करने

का ढ़ंग कुछ इस प्रकार का रहेगा कि आप अपने विरोधी, आलोचक स्वयं तैयार करेंगी।

आप दिखावा पसन्द नहीं करेंगी। इससे आपको रूखा, शुष्क एवं कठोर हृदय महिला समझा जायेगा। जबकि आप अन्दर से भावुक एवं दयालु हृदय की होंगी। आपकी रुचि अपने काम तक ही सीमित रहेगी एवं कठिन से कठिन कार्य को भी आप अंजाम देने की क्षमता रखेंगी। इससे आपके सहयोगी आपके आलोचक बन जायेंगे। आप श्रमशील, त्यागी महिला के रूप में जानी जायेंगी एवं आपकी प्रगति में आने वाली रुकावटों को आप आपनी इच्छा शक्ति के बलबूते पर दूर करने में सफल रहेंगी।

अंक दो का स्वामी चन्द्र आपको विभिन्न क्षेत्रों में असफलता देगा लेकिन अंक छः का स्वामी शुक्र आपके अन्दर कलात्मक भाव की वृद्धि करेगा जो कि आपकी कार्य शैली में दृष्टिगोचर होगा।

SAKET AGARWAL

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व-बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगे जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगे एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगे। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगे।

आपकी व्यवसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगे एवं आवश्यकतानुसार वक्त-वे-वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगे तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत-मस्तक होंगे।

CHANDANI AGARWAL

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है, अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकती हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचिपूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगी। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

SAKET AGARWAL

आपका जन्म विश्वाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। तुला लग्न के संयोजन से मेदिनीय क्षितिज पर जन्मकाल मेष नवमांश एवं मिथुन द्रेष्काण से यह स्मरणीय है कि आप अत्यंत आलसी प्रवृति के प्राणी हैं। इसके प्रभाव से यह भी स्पष्ट है कि आपका भविष्य ईश्वर की अनुकंपा से सांसारिक सुखों से युक्त एवं आप विलासप्रिय जीवन व्यतीत करेंगे।

आप धन संचित करने के लिए अन्य की अपेक्षा अति अनुकूल तरीके से प्रस्तुत होंगे। इस बात से यह भी स्पष्ट है कि आपमें धनोपार्जन की सभी दाव पेंच विद्यमान है। साथ ही आप दो पक्ष को कलह की स्थिति में लाकर अपना लाभ प्राप्त करेंगे। आप मुख्य रूप से अपनी आयु के प्रथम 21 वें वर्ष से 38 वें वर्ष तक 34 वे वर्ष के समयावधि में बहुत धन उपार्जन करेंगे।

आप अनुचित तरीके से बहुसंख्यक व्यक्तियों पर अहंकार की भावना से अधीर होकर आक्रमणकारी रूख आपना कर उसे तंग करने की प्रवृति रखेंगे। अधिकांश व्यक्ति जो आपके संपर्क में आएंगे वे आपकी बचकाना आचरण से अप्रसन्न रह कर आपके शत्रु बन जाएंगे। परंतु आपको अपनी चारित्रिक उच्चता हेतु उत्तम यह है कि आप शक्ति सम्पन्नता प्राप्त करें। अर्थात् मानवीय शक्ति संग्रह करें। तथापि वे लोग आपके स्थायी शत्रु बन ही जाएंगे।

आपका संदिग्ध चरित्र आपकी प्रभावशाली छवि को बेनकाव कर आपको बहुचर्चित एवं कुख्यात प्रदर्शित करेगा। आप धैर्यपूर्वक अपने व्यवहार को नीति पूर्ण बनाकर व्यवहारणीय बनाएं। अन्यथा आपकी समस्त धारणा कलुषित प्रमाणित होगी।

यदि आपकी ऐसी अभिलाषा है कि आप अपने घरेलू वातावरण एवं अपने परिवारिक जीवन को सुव्यवस्थित रखें तो सदा सर्वदा के लिए कुटनीतिज्ञ तरीके का संपादन करना अनुकूल होगा।

संप्रति आप अति वासना प्रिय व्यक्ति हैं। आप अपने जीवन संगिनी की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सके तथा वातावरण छिन्न भिन्न रहा तो आप संतुष्ट तथा प्रसन्न नहीं रहेंगे। आप सावधानी पूर्वक पारिवारिक एवं घरेलू जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत हो सकता है।

आपकी पत्नी आपको सदैव अच्छी प्रकार से प्रसन्न रखेगी तथा ऐसी आशा है कि आप सदैव अच्छी संतानों का सुख प्राप्त करेंगे।

आप निरंतर कुशलता पूर्वक सक्रिय रहने वाले प्राणी हैं। आप धनोपार्जन हेतु पूर्ण रूपेण लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर अनेक यात्रा करेंगे। आप असामयिक भोजन एवं मद्य पान एवं अति भोजन के कुप्रभाव से कुछ समय के पश्चात आपके उत्तम स्वास्थ्य को प्रभावित

कर देगा। आप यदि ऐसा चाहते हैं कि भविष्य में संभावित रोग यथा ट्यूमर, रक्त प्रवाह की न्यूनता संबंधी आदि रोगों से मुक्त रहें तथा मस्तिष्क रोग एवं मूत्र संबंधी रोग की परेशानी से वंचित रहें तो खान-पान के संबंध में सतर्कता पूर्वक आचरण करें।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आप अंकों में 3, 5, 6 एवं 9 अंक को छोड़कर 1, 2, 4 एवं 7 अंक का व्यवहार करें क्योंकि ये अंक अनुकूल फलदायी है।

आप रंगों में लाल, नारंगी एवं सफेद रंग को धारण करें तथा रंग पीला एवं हरा रंग आपके लिए त्याज्य हैं।

CHANDANI AGARWAL

आपकी जन्मपत्रिका के अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि जिस समय आपका जन्म हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न उदित था। साथ ही भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म के प्रभाव से जन्म नवमांश तुला एवं धनु राशि का द्रेष्काण उदित था। ज्ञातव्य है कि जन्मलग्न के प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं क्षमता का उचित उपयोग करेंगी। आप अपनी उन्नति के लिए तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपनी प्रतिभा एवं प्रवृत्ति के अनुसार अपना कार्यकलाप निर्धारित करेंगी। आप अपनी उन्नति के लिए अपनी योजना और गतिविधि के अनुसार अपने को उन्नति कारक कर सकती हैं। आप प्रारंभ में नयी कार्य शैली को संपादित करने की संघटनात्मक व्यवस्था कर लें। आप अपनी स्थिरता एवं मजबूती के लिए मात्र अपनी बुद्धि को लगनशील बनाएं। अपनी योजना के कार्यान्वयन के लिए अपने विचार में स्थिरता लाएं और बुद्धि का उचित संचालन करें। अपने विचारों में परिवर्त्तनशीलता लाकर एक कार्य या अन्य कार्य संपादित करने की प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए। आप अपनी धार्मिक प्रवृति के अनुसार एकाग्रचित होकर, अपने निर्णयानुसार एक बार एक ही कार्य को संपादन करने के प्रवृति में कोई बदलाव नहीं लाएं तो निश्चित रूप से आप सफल होंगी। आप अपनी कामयाबी प्राप्त करने के लिए अन्य संभावनाओं के त्याग कर सफल होंगी।

आप में अनुकूल कार्यकलाप संपादन करने की बहुत बड़ी शक्ति विद्यमान है। अपरिमेय साहस एवं आत्मविश्वास के साथ कार्य की सफलता हेतु अग्रसर रहेंगी। आपके प्रभाव एवं निर्देशन से सभी लोग प्रभावित होते हैं तथा आपकी नेतागिरि के प्रभाव से आपका निर्देशन प्राप्त करते हैं। आप में कठिन कार्य संपादन करने की क्षमता है तथा आप परिश्रम से बहुत अधिक धन और यश प्राप्त करेंगे। परंतु आप बहुत अधिक धन का अपव्यय करती हैं। परिणामस्वरूप आपके लिए बहुत धन संग्रह करना एक दुष्कर कार्य है।

आप में सतत जहां-तहां भ्रमण करने की प्रवृति विद्यमान है। आप एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा प्रेमपूर्वक करेंगी तथा नये-नये स्थान पर नयी मित्रता स्थापित करेंगी।

आप अपने मित्रों एवं शुभ चिंतकों के द्वारा उन्नति करेंगे तथा अपने जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

आपको अपने शत्रुओं के प्रति सशंकित अथवा चिंतित रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। वास्तव में वे लोग आपको पूर्ण सुरक्षित समझते हैं। क्योंकि वे आपकी क्षणिक क्रोधयुक्त मनोदशा देख कर भयभीत रहेंगे।

आप अपने परिवार के प्रति पूर्ण सतर्क रह कर अपने परिवार के लिए अतिरिक्त समय निकाल लेती हैं। आप पारिवारिक संतुष्टि के पश्चात् अपनी जवावदेही से पूर्णरूपेण मुक्त है।

आप सुखपूर्वक अपनी संपूर्ण आयु आनंददायक ढंग से व्यतीत कर लेंगी। क्योंकि आप में सशक्त आंतरिक शक्ति विद्यमान है। आप अपनी संतुष्टि हेतु विपरीत योनि के प्रति आसक्त रह कर उत्तेजनात्मक जीवन-व्यतीत करेंगी। परिणामस्वरूप आप जिस प्रकार यौन संबंध का निर्वाह करेंगी वह संबंध किसी खास यौन रोग की उत्पत्ति का कारक होगा। अतः किसी पुरुष के साथ भ्रमण एवं सैर सपाटे में सावधानी रखें। अन्यथा आपकी लापरवाही से पसंद किया गया गुप्त कार्य कष्टदायक हो सकता है।

आप शरीर से दुबली-पतली परंतु मांसल युक्त सशक्त शरीर से युक्त रहेंगी। आपका ललाट उन्नत एवं आपका चेहरा लंबा है तथा ओठ नुकीली होगी। यह संभव है कि जल्द ही आपके सिर पर चोट लग जाए तथा घाव का चिंह्न बन जाए। आप सदैव ही बुद्धिमत्ता पूर्ण ढंग से सावधानी पूर्वक सुरक्षित ढंग से गंभीर दुर्घटना से बचें। मुख्यतः दुर्घटना से अपने सिर की सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें। इसलिए शीघ्रतापूर्वक गाड़ी चलना त्याग दें तथा सावधानी पूर्वक व्यस्त पंथ को पार करें।

आप सदैव ही अपने भोजन एवं समुचित विश्राम के प्रति पूर्ण रूपेण सतर्क रहें। क्योंकि आपको जीवन में आराम नही मिलता है। समय पर भोजन और विश्राम नही करना हानिप्रद रहेगा। आप सदैव ही मद्यपान एवं मासांहार का त्याग करें। ग्रहों के प्रभाव से आपके लिए हरी साक-सब्जी का आहार अनुकूल है। इसके अतिरिक्त निश्चिन्तता पूर्वक विश्राम एवं अच्छी मात्रा में शयन करें।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए लाल, ताम्र वर्ण एवं पीला रंग अनुकूल है। आपके लिए सदैव ही काला रंग त्यागनीय है।

आपके लिए भाग्यशाली अंक 9 एवं 1 अंक है। आपके जीवन मे अंक 6 एवं 7 अंक सर्वथा त्याज्य है।

SAKET AGARWAL

आप पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण देव, नाड़ी आद्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "ह" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा हरीश।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त तथा सहनशील होगा। कठिन संकट की घड़ी में भी आपको किसी प्रकार की घबराहट या उतावलापन नहीं होगा। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने वाले पुरूष होंगे। शारीरिक दृष्टि से आप अच्छे स्वास्थ्य से युक्त होकर गौरवर्ण के तथा सुन्दर होंगे। भाग्य बल पर आप खूब उन्नति करेंगे। समाज में आपकी लोकप्रियता आपके कल्याणकारी कार्यों के द्वारा रहेगी क्योंकि आप सभी वर्गो की भलाई के लिए कार्य करेंगे। साथ ही आप पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

आप का स्वभाव अच्छा तथा चाल चलन उत्तम रहेगा। यदा कदा आपकी मति में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा फलस्वरूप आप दुष्कर्म करने की ओर प्रेरित होंगे। जीवन में आप हमेशा तृष्णा से आतुर रहेंगे तथा इससे आपकी तृप्ति कभी नहीं होगी। लेकिन सन्तोष का भाव भी आपके मन में रहेगा। किसी वस्तु या द्रव्य की अल्प प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे तथा कठिन से कठिन विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। समाज में आप धन तथा बल के प्रभाव से कीर्तिवान कहलाएंगे। आप लेखन कार्य के प्रति आकर्षित रहेंगे तथा कविता सृजन या रचना में आप सफलता प्राप्त करेंगे।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा शास्त्रों के ज्ञान प्राप्ति के लिए आप इनके अध्ययन में सतत् तत्पर रहेंगे। आप शुभ रत्न तथा सोने से बनाए गये गहनों से सुशोभित रहेंगे। दानशीलता का भाव भी आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा द्रव्य एवं भूमि से भी आप युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

CHANDANI AGARWAL

आप रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, गण देव तथा योनि गज होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ची" या "चि" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से अच्छे स्वभाव की महिला होंगी तथा समाज में अन्य लोगों से आपका अत्यन्त ही मधुर व्यवहार रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप हमेशा धन सम्पति से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इन्द्रियों को आप पूर्ण वश में रखेंगी तथा लौकिक जीवन संयमपूर्वक व्यतीत करेंगी। इससे आपके मन में अनावश्यक इच्छाओं की उत्पति नहीं होगी। आप में ईमानदारी का गुण विद्यमान रहेगा एवं आपके अधिकांश कार्य इसी गुण से सम्पन्न होंगे। साथ ही बुद्धि से भी आप निर्मल रहेंगी तथा व्यापारादि कार्यों में शुद्ध रूप से लाभार्जन के लिए उत्सुक रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी एवं धनाढ्य महिला के रूप में भी ख्याति अर्जित करेंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

आप के सभी अंग सम्पूर्ण एवं सुन्दरता से युक्त रहेंगे। इससे आपका सौन्दर्य आकर्षक बना रहेगा। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रियता अजित करेंगी तथा सबको यत्नपूर्वक सहायता प्रदान करती रहेंगी। शौर्योचित गुणों से आप सर्वदा युक्त रहेंगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप का हृदय निर्मल होगा तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव रहेगा।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

जीवन में विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में आप हमेशा निपुण रहेंगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। आपको विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा समाज में एक विदुषी के रूप में भी आप की प्रसिद्धि रहेगी। इसके अतिरिक्त आप नाना प्रकार के वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।

आपके जानु भाग में कोई चिन्ह या निशान भी अंकित हो सकता हैं। आप सलाह आदि देने के कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष होंगी तथा इससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपका पूर्ण आदर तथा सम्मान करेंगे। आप सुन्दर पति तथा गुणसम्पन्न पुत्रों से युक्त रहेंगी एवं आपके मित्र भी प्रायः शिक्षित तथा गुणवान ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप दृढ संकल्पी होंगी एवं स्थिर धन सम्पत्ति से भी सुशोभित रहेंगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

SAKET AGARWAL

आप मिथुन राशि मैं पैदा हुए हैं। अतः आप के नेत्र अल्प रक्तिमता लिए हुए काले रंग के तथा सिर के बाल घुंघराले होंगे। आप के शरीर के समस्त अंग पुष्ट कोमल तथा स्वस्थ होंगे तथा नासिका भी उन्नत होगी। आप विभिन्न शास्त्रों के विषय में ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छुक रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञान की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करेंगे। सन्देशों के आदान प्रदान संबंधी कार्य को आप प्रवीणता से सम्पन्न करेंगे। आप अत्यन्त तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा इसके द्वारा दूसरे लोगों की मन की बात को जानने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप दूसरों से विनयशील व्यवहार रखेंगे जिससे आप सबकी प्रशंसा के पात्र रहेंगे। आपकी वाणी मधुर तथा उत्तम होगी जो श्रोता को आनन्द प्रदान करेगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप अति निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। संगीत में आपकी तीव्र अभिरूचि होगी तथा नृत्य शास्त्र के आप विद्वान होंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आप ऊंचे कद के पुरूष होंगे तथा नसें आपकी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी साथ ही हाथ में आपकी मछली का चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर तथा दर्शनीय होंगे। काव्य लेखन में आपकी स्वाभाविक रूचि होगी तथा साहित्य या कविता सृजन में आपको सफलता की प्राप्ति हो सकती हैं। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने का सौभाग्य आपको प्राप्त होगा। सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे परन्तु स्त्री के हमेशा वश में रहेंगे तथा उससे पराजित भी रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आजीवन आप हास्यकारी अर्थात हंसने तथा हंसाने के कार्य को करते रहेंगे। भ्रमण या घूमना फिरना आपको रूचिकर लगेगा तथा घर के अन्दर रहकर भी सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आप अपने सत्कार्यों तथा सद्व्यवहार के कारण अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे तथा सभी वर्गों से मान सम्मान प्राप्त करेंगे। स्त्री वर्ग आपसे विशेष आकर्षित रहेगा तथा स्त्री समाज में आप प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आप अपनी प्रतिभा तथा सज्जनता के द्वारा समाज में आदर तथा गौरव को भी प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

अपने लेख तथा भाषण में आप श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जन सुगमता से हृदयंगम करने में सफल रहेंगे। आप अपने संबंधियों तथा समाज के सभी वर्गों के हित कार्य करने के लिए सदा तन मन धन से तत्पर रहेंगे। आपका चाल चलन श्रेष्ठ तथा प्रकृति पित्त कफ मिश्रित रहेगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी दृष्टि हमेशा चंचल रहेगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपका अगाध प्रेम रहेगा तथा अपने वैभव एवं ऐश्वर्य के द्वारा समाज में दूर दूर तक यश की प्राप्ति करेंगे। भाषण देने में भी आप अत्यन्त प्रवीण होंगे तथा दृढ़ विचार एवं संकल्प वाले भी होंगे। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा सर्वकार्यों को सिद्ध करने में आप सर्वथा समर्थ रहेंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई तक स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत

रखने चाहिए। साथ ही पन्ना, मिश्री, हरा वस्त्र इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा अन्य लाभ मार्ग प्रशस्त होगे। साथ ही बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप करवाने चाहिए।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

CHANDANI AGARWAL

मीन राशि में पैदा होने के कारण आपका सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत तथा नासिका ऊंची रहेगी। साथ ही आपकी आखें भी देखने में अति सुन्दर तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। आपका कटिभाग भी क्षीण रहेगा। चित्रकारी या शिल्प के प्रति आप स्वभाव से ही रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में आशातीत सफलता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। संगीत शास्त्र में भी आपका हार्दिक आकर्षण रहेगा तथा इसका ज्ञानार्जन करने के लिए भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। कई प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा एवं समाज में एक विदुषी के रूप में आपका यश व्याप्त रहेगा। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी। पुरूषवर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। आप अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप में क्रोध की अल्पता ही रहेगी तथा राजकीय सेवा में आप नियुक्त होंगी। खान या पृथ्वी के अन्दर से निकाले गए पदार्थो से आप विशेष लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। पति को आप हमेशा अपने पूर्ण नियंत्रण में रखेंगी तथा वे सभी सांसारिक कार्य आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव सुशील रहेगा तथा अन्य जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने के प्रति आपकी तीव्र इच्छा रहेगी तथा इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए नित्य उत्सुक रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में दानशीलता का भाव भी रहेगा तथा यथाशक्ति इसका अनुपालन भी जीवन में करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से उत्पन्न पदार्थो तथा मोती शंख आदि रत्नों से सुशोभित रहेंगी तथा व्यापार आदि में इनसे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की सम्पत्ति को भी प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप हमेशा सुन्दर आकर्षक एवं नवीन वस्त्रों के लिए लालयित रहेंगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए सर्वदा तत्पर एवं उत्सुकता का प्रदर्शन करेंगी। इसके साथ ही आप

का शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप जल का अधिक मात्रा में उपयोग करेंगी तथा दिन में कई बार इसको पीने की इच्छा करेंगी। आप अपने पति के ऊपर पूर्ण विश्वास रखेंगी तथा उनसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगी। अतः आपका पारिवारिक जीवन सुख तथा आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। आप उत्तम श्रेणी की विदुषी होगी तथा कृतज्ञता के सद्गुण से सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक धन्यवाद भी करेंगी। साथ ही आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके कई महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक जितेन्द्रिय महिला होंगी तथा संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी इससे आपके मन में अनावश्यक इच्छाओं की उत्पति का अभाव रहेगा। आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से कार्य सम्पन्न करेंगी। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी एवं इससे आप अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आप निर्मल बुद्धि से युक्त रहेंगी तथा अन्य जनों से कोई धोखा आदि नहीं करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप उदरपोषण संबंधी कार्यों में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी तथा कभी कभी लाभ मार्ग अवरूद्ध होने के कारण आर्थिक कठिनाई से परेशानी की अनुभूति होगी। आप कान्तिमय शरीर से युक्त रहेगी तथा इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होती रहेगी। पिता से आप पूर्ण धन सम्पति अर्जित करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आप में साहस का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा पराक्रमी एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए आप नित्य तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में संतोष का भाव भी रहेगा तथा जो कुछ भी उपलब्ध होगा उसी में सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।

तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति से युक्त रहेंगी तथा शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा सभी लोग आपका उचित मान सम्मान करेंगे लेकिन कंजूसी की प्रवृति होने के कारण आपके संबंधी या मित्र आपसे कभी कभी अप्रसन्न रहेंगे। अपने परिवार या कुल में आप सर्वप्रिय रहेंगी तथा सभी पारिवारिकजन आपको स्नेह तथा सम्मान प्रदान करते रहेंगे। सेवा कार्यों में भी आप प्रवृत रहेंगी तथा इन कार्यों को करने में आप मानसिक संतुष्टि प्राप्त करेंगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगी। साथ ही आपका चाल चलन श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग से आपका विशेष अनुराग रहेगा।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य, व्यक्तित्व तथा विद्धता से आप समाज में एक सम्माननीय महिला होंगी तथा अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन प्रसन्नता एवं सुख से व्यतीत करेंगी।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की उपासना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत पुखराज, पीत वस्त्र, सोना, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आप के समस्त चिन्ताएं दूर होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के

तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिस कास्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते है तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगी। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगी। आप एक स्वाभिमानी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यभाषी महिला होंगी तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगी। आप तेजस्वी एवं साहसी महिला होंगी तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगी। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगी तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा अपनी

महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सांसारिक सुखों तथा धन ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस राशि के प्रभाव से जीवन में आपको किसी निकट संबंधी की धन सम्पति की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी क्योंकि अपने निकट संबंधियों से आपका व्यवहार सद्भावना से परिपूर्ण रहेगा तथा उनकी सुख दुख में पूर्ण सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगी। बागवानी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इसमें तत्पर रहेगी।

जीवन में आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ समय व्यतीत करेंगी साथ ही समाज में भी एक आदरणीय महिला रहेंगी तथा अन्य लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक भी रहेंगी तथा इस प्रवृति का समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी। मिष्ठान भक्षण के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी । अन्य जनों से सामान्यतया वार्तालाप में आप अत्यंत ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा बहुमूल्य वस्तुओं तथा रत्नों को अर्जित

करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शनि भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों से युक्त होंगे तथा आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की आपके पास बहुलता होगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका प्रभाव रहेगा एवं सामाजिक जनों से वांछित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। आप की कुंडली में किसी वृद्ध व्यक्ति की चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति के भी योग बनते है। इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा अन्यत्र भी स्वपरिश्रम पराक्रम एवं बुद्धिमता से धन सम्पत्ति अर्जित करने में सफल होंगे। आपको चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से लाभ होगा। अतः दोनो पर ही आप यथोचित मात्रा में निवेश कर सकते है।

आप को उत्तम आवास की प्राप्ति होगी एवं घर भी आधुनिक रूप से पूर्ण रूपेण सुसज्जित होगा। इसके आकर्षण एवं स्वछता के लिए आप व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका जीवन में आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा भौतिक्ता एवं आधुनिक विचारों से युक्त होगी उनमें व्यवहार कुशलता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने इन्हीं गुणों से वह परिवार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होंगी। परिवार के सभी सदस्य उन्हें यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव विद्यमान होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित मात्रा में आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होगी एवं आपकी उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी सी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्याध्ययन में आप प्रारंभ से ही रूचिशील होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छी सफलताएं अर्जित करेंगे। इसी संदर्भ में आप स्नातक परीक्षा अच्छी श्रेणी में उतीर्ण करेंगे जिससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं वन्धुवर्ग से वांछित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी डिग्री अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

नैसर्गिक पापी ग्रह शनि की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था के बाद रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः युवावस्था

से ही आप उचित खान-पान का ध्यान रखें तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षित होंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत में आप इसे प्राप्त करेंगी तथा समाज में एक प्रतिष्ठित महिला मानी जाएंगी।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगी एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी महिला होंगी अतः जीवन में हार कम ही मानेंगी। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगी तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगी।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्तरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगी तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगी। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृति होने के कारण सामन्जस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगी। इससे आपके संबंधो में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुख में अवश्य उनका साथ देंगी। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रूचि अल्प मात्रा में ही रहेंगी फलतः स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकती हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगी ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रूचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगी क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी महिला है। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगी।

सिंह राशि की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगी। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोंनो को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगी। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगी तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगी तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में

विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल भ्रमण प्रिय प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपके पति का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में वह दक्ष होंगे एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा यदा कदा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौर वर्ण के पुरूष होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य एवं व्यक्तित्व में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह उचित समय पर होगा तथा इसमें कोई अनावश्यक परेशानी नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को एक दूसरे की सहमति से पूरा करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज तथा उपहारों की प्राप्ति होगी जिससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा।जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही साले एवं सालियों से भी सौम्य स्वभाव के कारण उनके मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

SAKET AGARWAL

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्रफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

CHANDANI AGARWAL

आपके जन्मसमय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यवसाय श्रम साध्य होने के साथ साथ बुद्धि एवं मानसिक क्रिया से सम्पन्न होगा। सूर्य की शत्रु राशि में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा कार्य क्षेत्र में अनावश्यक व्यवधान भी उत्पन्न होंगे परन्तु अपने तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वभाव से आप वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी।

जीविका की दृष्टि से आपके लिए सरकारी सेवा, औषधि विज्ञान, वैद्य, डाक्टर तथा प्रतियोगी परीक्षा द्वारा प्राप्त प्रशासकीय सेवा अनुकूल रहेगी। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी आपको वांछित सफलता एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। अतः आपको अपनी आजीविका का क्षेत्र उपरोक्त विभागों में ही चयन करना चाहिए। इससे आपको सतत सफलता मिलती रहेगी एवं मन में भी सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में दवाओं का व्यापार, ऊनी वस्त्र, धी, गुड़, चीनी तथा रत्न संबंधी कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रो में व्यापार करने से आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होगा तथा किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। जिससे मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

पंचमेश सूर्य की दशमभाव में स्थित के प्रभाव से अपने कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली एवं आदरणीय मानी जाएंगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आपको किसी उच्च एवं आधिकारिक पद की प्राप्ति भी होगी लेकिन इसमें किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः ऐसे में आपको किसी भी प्रकार की शीघ्रता या अशांति का अनुभव नहीं करना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने क्षेत्र में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके परस्पर संबंध सामान्यतया अच्छे रहेंगे परन्तु सूर्य की शत्रु राशि में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प काल के लिए ही होगा तथा सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगी। सूर्य के त्रिकोणपति के प्रभाव से पिता से आपको आवश्यक धन सम्पति सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी परन्तु अपनी ओर से आप उन्हें अपेक्षित सहयोग प्रदान अल्प मात्रा में ही करेंगी।

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2025

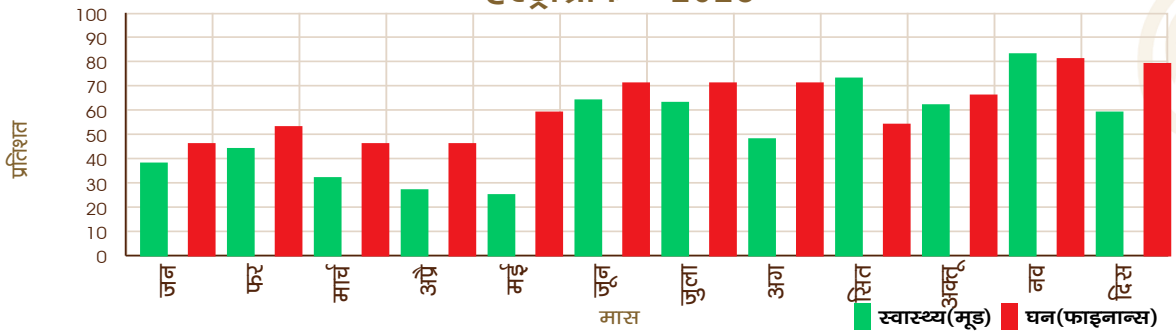

CHANDANI AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2025

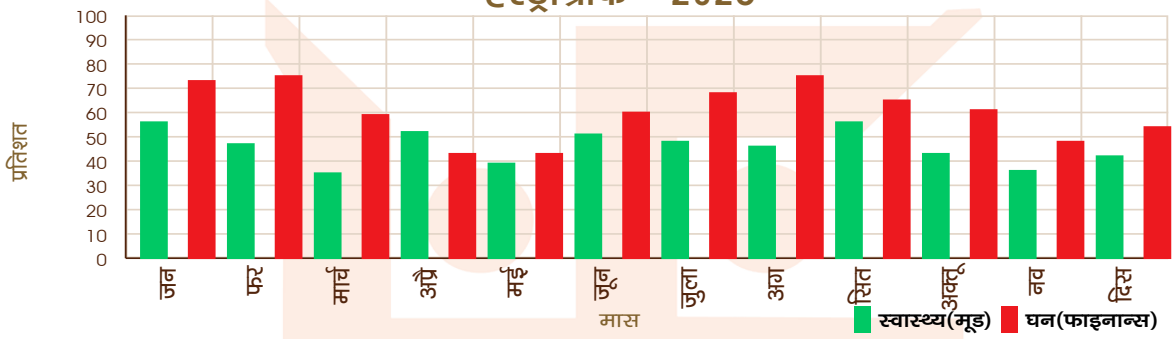

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2026

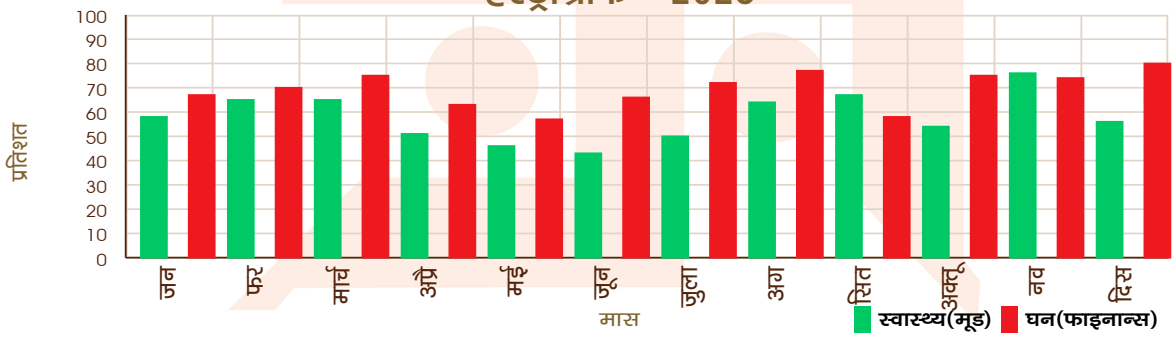

CHANDANI AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2026

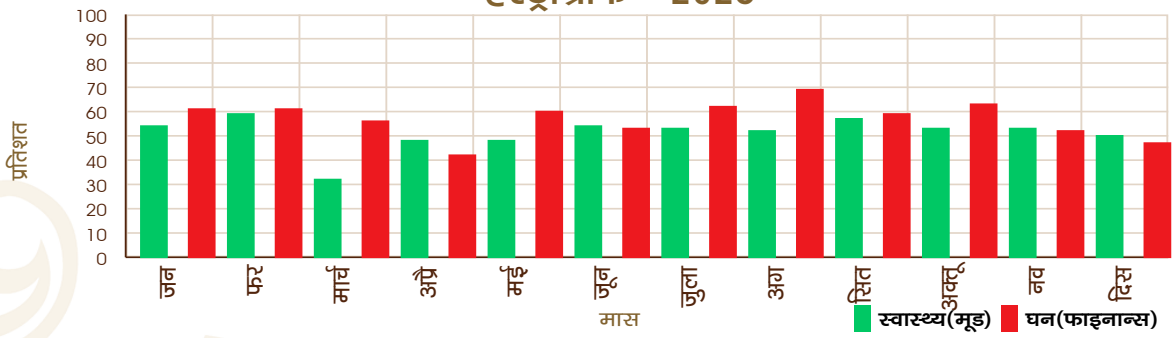

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2027

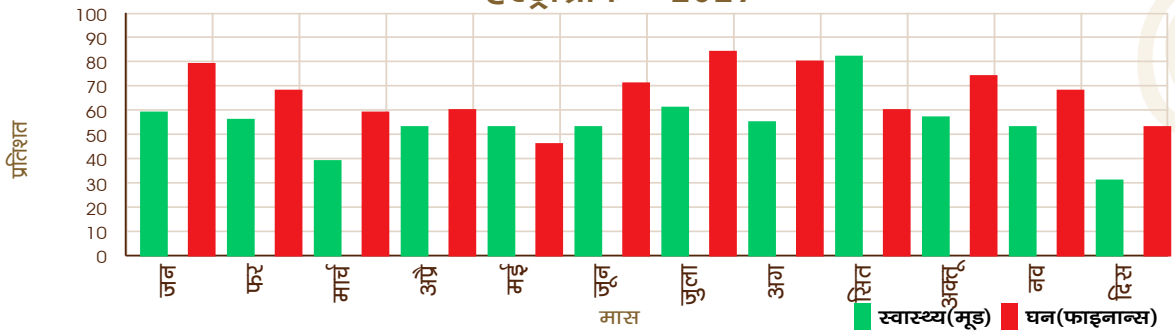

CHANDANI AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2027

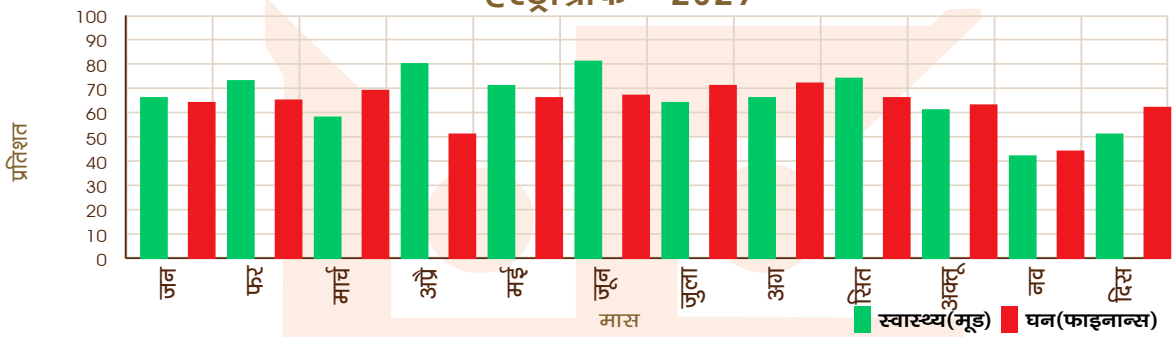

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2028

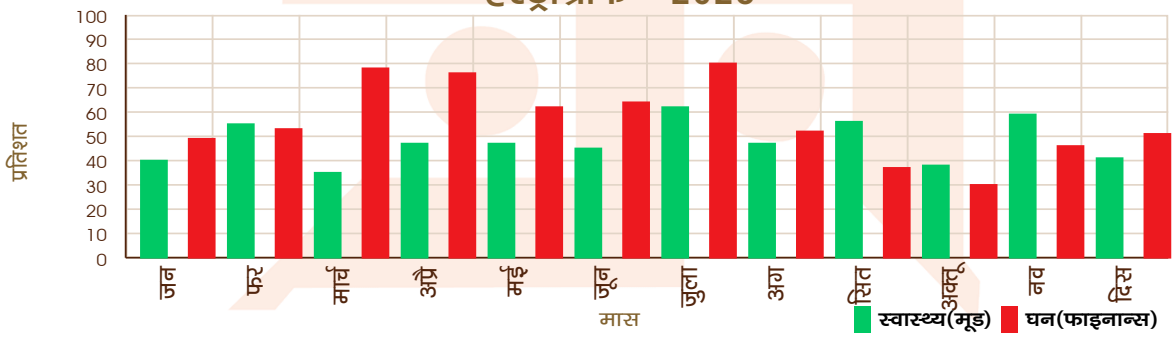

CHANDANI AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2028

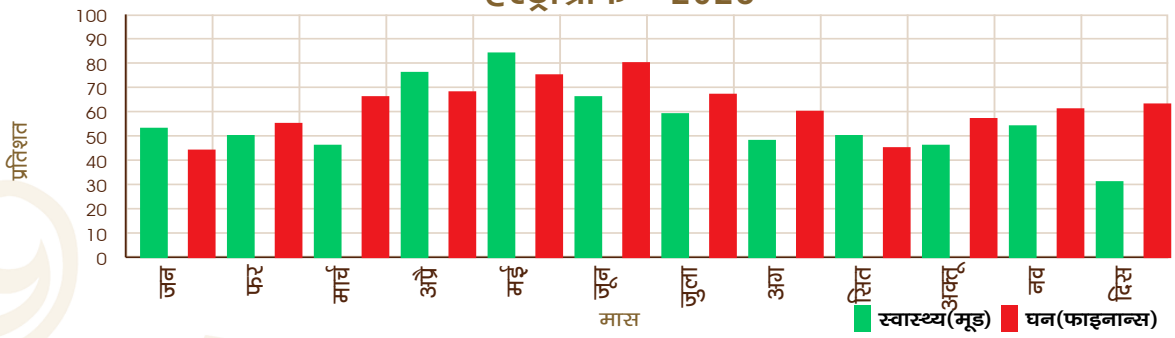

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2029

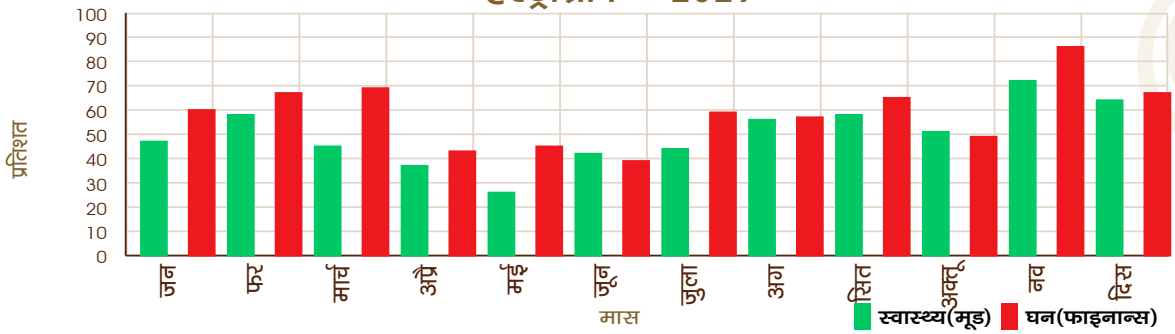

CHANDANI AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2029

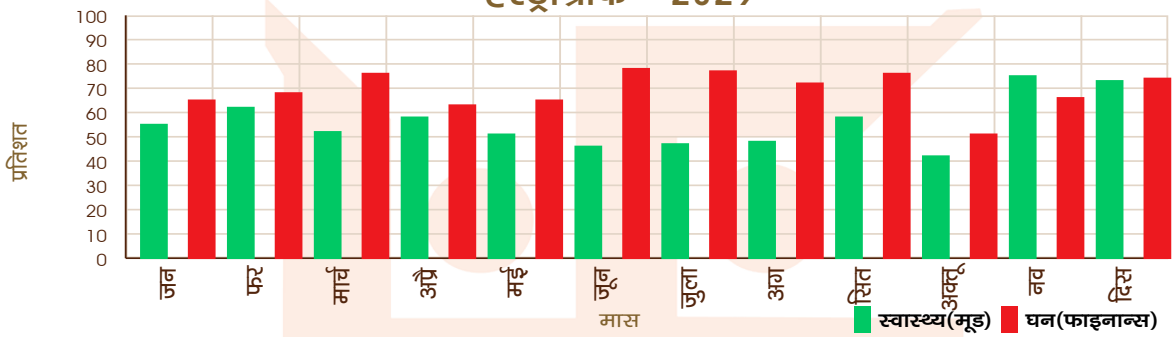

SAKET AGARWAL

एस्ट्रोग्राफ – 2030

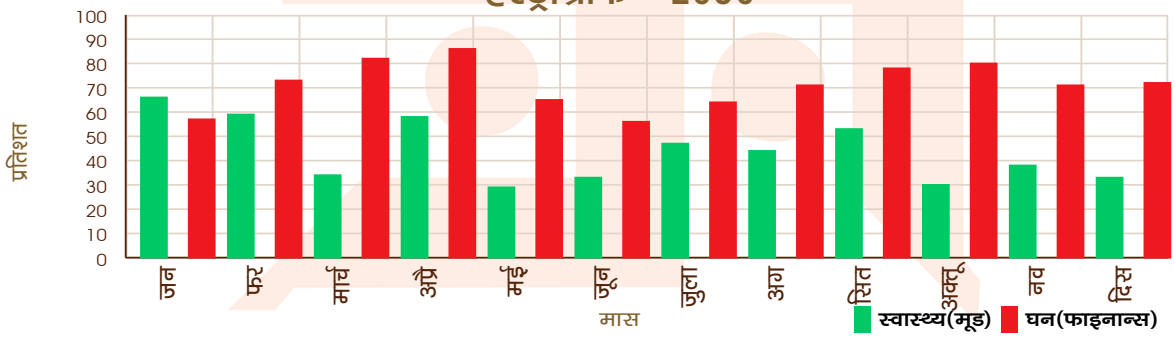

CHANDANI AGARWAL
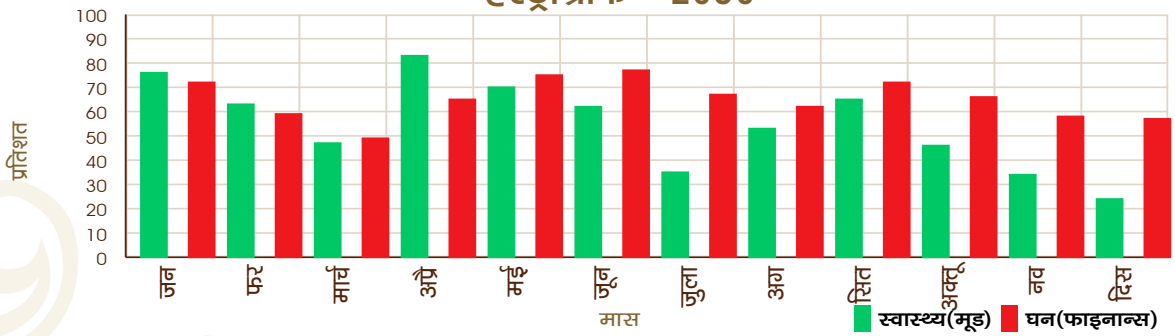
एस्ट्रोग्राफ – 2030